रामाश्रम सत्संग, ग़ाज़ियाबाद - डिजिटल प्रकाशन

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज
के प्रवचनों के संकलित अंश)

2025

एक प्रेम के नाते को छोड़कर मै और किसी नाते को नही जानता। केवल प्रेम और वह भी निस्वार्थ प्रेम। जो लोग बिना अपने स्वार्थ के मुझे प्रेम करते है। चाहे वे सज्जन है या दुष्ट, मै "उन्हें " प्रेम करता हूँ। वे मेरे है और मै उनका। वे सदैव मुझ पर आश्रित रह सकते है और वे देखेंगे कि मै सदैव उनकी सेवा के लिए प्रस्तुत हूँ।

परमसंत महात्मा डा श्री कृष्णलाल जी महाराज
निवासी - सिकंदराबाद (उ. प्र.)
(जन्म १५-१०-१८९४ निर्वाण १८-५-१९७०)

रामाश्रम सत्संग (रजि.) SE 297, शास्त्री नगर, हापुड़ रोड, गाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश)

क्रमांक	अनुक्रमणिका	पृष्ठ क्रमांक
1	पूज्य गुरुदेव का सर्वोत्तम सन्देश	6
2	स्तुति और निन्दा	7-8
3	सिर्फ गुरु या मालिक की स्तुति से काम रखो	9
4	. हमारा साधन	10
5	हमारे तरीके में भाइयों को	11
6	आत्मा का आनन्द ऐसा आनन्द है	12
7	. मनुष्य की आत्मा पर चार मोटे परदे पड़े रहते हैं	13
8	अगर तुम किसी की स्तुति करना चाहते हो	14
9	अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें असली आनन्द मिले	15
10	औरों की निन्दा भूल कर भी न करो	16
11	भक्तों की शान निराली होती है	17
12	. मन क्या है, पहले इसे थोड़ा समझो	18
13	असली आनन्द आत्मा में है	19
14	ईश्वर के तीन रूप माने	20
15	मन स्वतंत्र है, वह स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है	21
16	अगर ईश्वर से प्यार है और दुनियाँ से भी प्यार है	22
17	अंतर को शुद्ध करने के लिए पहले अपने इख़लाक़ की ...	23
18	ईश्वर प्रेम मुज्जसिम है	24
19	ख्वाहिश पैदा करते हो तो संस्कार बनते हैं	25
20	जब आदमी को दुनियाँ की चीज़े मिलती हैं	26

21	जो चीज़ तुम्हें फँसाए हुए है	27
22	जो चीज़ तुम अपनी समझते हो, वह तुम्हारी नहीं है	28
23	तमोगुणी मन मनुष्य को इन्द्रिय-भोगों में फंसाता है	29
24	तुम्हारा गुरु हर समय तुम्हारे साथ है	30
25	दया और कृपा जो सब पर बराबर होती रहती है	31
26	दुनियाँ की ख्वाहिशात को ज्ञान से दबा कर	32
27	दुनियाँ को तो छोड़ना नहीं चाहते	33
28	नए सत्संगी की परीक्षा नहीं ली जाती	34
29	परमात्मा के पास सारी चीज़ें है	35
30	परमार्थ, यानी अपनी आत्मा का अनुभव करने के लिए	36
31	परमार्थ-पथ पर चलने वाले को घबराना नहीं चाहिए	37
32	पहले ध्यान आता है, फिर बाद में सुमिरन	38
33	मन दुनियाँ में बहुत समय से फंसा हुआ है	39
34	मन बहुत दूर जाता है	40
35	मन से सोचो और बुद्धि से विचार करो	41
36	यह सोच कर मत बैठो कि परमात्मा बड़ा दयालु है	42
37	संतों का सिद्धांत है कि - ईश्वर है और अवश्य है	43
38	सत्संग को असली परमार्थी शिक्षा देने का विद्यालय कहा जाता है	44
39	सत्संग में आकर पाँच बातें हर प्रेमी भाई को समझ लेनी चाहिए	45
40	संतमत प्रेम का मत है	46
41	जीवन-मुक्त - असली मोक्ष की दशा	47
42	सबसे बड़ा अभ्यास यह है कि परमात्मा के चरणों में ध्यान लगावे	48

43	हम इन तीन चीज़ों से दुनियाँ में फंसते हैं	**49**
44	जब जब मन धोखा दे, दुआ करो, मदद मिलेगी	**50**
45	जितनी भी दुनियाँ की खुशियाँ और आनन्द हैं	**51**
46	परमात्मा ने दुनियाँ को क्यों पैदा किया **?**	**52**
47	मनुष्य जीवन का आदर्श	**53**
48	संत की सेवा में जब भी जाओ	**54**
49	सागर के मोती	**55**

श्रीकृष्ण - वाणी

==========

<u>पूज्य गुरुदेव का सर्वोत्तम सन्देश</u>

एक प्रेम के नाते को छोड़कर और मैं
किसी नाते को नहीं जानता - केवल
प्रेम और वह भी निस्वार्थ प्रेम !
जो लोग बिना अपने स्वार्थ के मुझे प्रेम
करते हैं, चाहे वह सज्जन हैं या दुष्ट,
मैं उन्हें प्रेम करता हूँ ! वे मेरे हैं और
मैं उनका ! वे सदैव मुझ पर आश्रित
रह सकते हैं और वे देखेंगे कि मैं
सदैव उनकी सेवा के लिए प्रस्तुत हूँ !

****

(महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

(जन्म : 15-10-1894 :: निर्वाण 18-05-1970 }

==========

स्तुति और निन्दा

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

अगर तुम किसी की स्तुति करना चाहते हो तो अपने गुरुदेव की या मालिक (परमात्मा) की करो और निन्दा करना चाहते हो तो अपनी करो ! गुरु या मालिक की स्तुति करने से तुम्हारे ख़्यालात ऊँचे होंगे और जितने अच्छे गुण हैं वे ख़ुद-व-ख़ुद खैंच शक्ति के प्रभाव में आकर तुम्हारी तरफ़ आने लगेंगे और तुमको अपना केंद्र बनाते जायेंगे ! किसी दिन ख़्याल के असर की तासीर से तुम में वह गुण आ जायेंगे जो तुम हासिल करना चाहते हो और जो तुम्हारी ज़िन्दगी का लक्ष्य है !

गुरु इच्छित आदर्श का नाम है जो तुम्हारे दिमाग़ में है और जो तुम बनना चाहते हो ! गुरु के जिस्म के ख़्याल से तुम्हारा ख़्याली आदर्श यानी सूक्ष्म गुरु बार-बार तुम्हारे ख़्याल में आवेगा और उस बार-बार के ख़्याल से आत्मा की मदद लेकर तुम आहिस्ता-आहिस्ता वही बनते जाओगे ! यह एक ऐसी सच्ची बात है जिसमें शंका करने की गुँजायश नहीं है ! जब तुम अपनी निन्दा करोगे तो जितनी बुरी बातें हैं जिनकी वजह से तुम अपनी निन्दा करते हो, सामने आयेंगी अगर तुंम उनसे नफ़रत करते हो तो वे आहिस्ता-आहिस्ता दूर होती जायेंगी और एक वक़्त ऐसा आएगा जब तुमको ख़्याल भी न रहेगा कि फलां ऐब तुम में था और उसका संस्कार क़तई तौर से नष्ट हो जायेगा !

सिर्फ़ गुरु या मालिक की स्तुति से काम रखो, यहाँ तक कि गुरु व मालिक के अस्तित्व को तुम अपना अस्तित्व अनुभव करने लगो ! अब स्तुति भी बंद हो जायेगी क्योंकि काम पूरा हो गया है और

उसकी ज़रूरत नहीं रही ! स्तुति करते रहने से परमात्मा, जो तुम्हारा ध्येय है, उसकी याद बराबर होती रहेगी और ख़्याल बराबर उस तरफ़ रहेगा जिसकी वजह से तुम रोज़ -व-रोज़ अच्छे बनते जाओगे ! गुरु व मालिक इन्सान को नहीं कहते ! वह सद्गुणों का समूह और इच्छित आदर्श है जो तुम्हारे दिमाग़ में है और जो तुमको बनना है !

अपनी निन्दा करने से अपनी कमज़ोरियों और बुराइयों की तुमको याद आयेगी और क्योंकि तुम उनसे घृणा करते हो, आहिस्ता-आहिस्ता वे तुम्हारा पीछा छोड़ देंगी और इन दोनों युक्तियों से तुम्हारी आत्मा के ऊपर से गिलाफ़ हट जायेंगे और आत्मा असली हालत में प्रकाशित होगी और तब परमात्मा का प्रेम जो उसकी असलियत और जान है, चमक उठेगा जिससे बाक़ी मैल भी बिलकुल इस तरह दूर हो जायेगा जैसे एक चिनगारी जंगल को साफ़ कर देती है ! तुम कृतकृत्य जो जाओगे और ऐसी स्थिति प्राप्त कर लोगे जिसमें शान्ति ही शान्ति है और सब तरह के सुख ही सुख हैं !

औरों की निन्दा भूल कर भी न करो, यह संतों और महात्माओं का क़तई हुक्म है कि बुराई करने वाला परमार्थ का अधिकारी नहीं हो सकता ! हज़रत मुहम्मद साहब के पास एक चोग़ा था जो उनके इस्तेमाल में रहता था ! जब उनके निर्वाण का समय आया, आपने अपने ख़लीफ़ाओं को बुलाया और कहा कि -"हम यह चोग़ा आप में से एक साहब को देना चाहते हैं ! बतलाइये कि आप इसका क्या बदला देंगे ?" हर एक ने अपने ख़्यालात के मुताबिक अर्ज़ की ! एक साहब ने फ़रमाया कि मैं उम्र भर ख़िदमते-ख़ल्क़ (लोक सेवा) करता रहूँगा ! दूसरे साहब ने फ़रमाया कि मैं बेइंतहा इबादत (पूजा) करूँगा ! तीसरे ने कहा कि मैं रियाज़त (अभ्यास) करूँगा ! एक और साहब ने फ़रमाया कि मैं इसके बदले में उम्र भर मज़हबी ख़्यालात का प्रचार करता रहूँगा ! गरज़े कि हर साहब ने कुछ-न-कुछ जो ख्याले शरीफ़ में आया फ़रमाया ! आख़िर में हज़रत अबूबक्र साहब सिद्दीक़ी ख़लीफ़ा अव्वल ने फ़रमाया कि - "हज़ूर ! अगर यह चोग़ा मुझको बख़्शा जाये तो मैं तमाम उम्र इसी तरह ख़ल्के-ख़ुदा (ईश्वर की श्रष्टि) की ऐबपोशी (बुराई ढकना) करूँगा, जिस तरह यह चोग़ा जिस्म की परदापोशी (ढंकना/छिपाना) करता है !" हज़रत ने खुश होकर वह चोग़ा उनको इनायत फ़रमाया ! इससे ज़्यादा ऐबपोशी की बरकत के बारे में और क्या कहा जा सकता है ?

(संत वचन – 1)

श्रीकृष्ण - वाणी

(**ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज**)

सिर्फ़ गुरु या मालिक की स्तुति से काम रखो, यहाँ तक कि गुरु व मालिक के अस्तित्व को तुम अपना अस्तित्व अनुभव करने लगो **!** अब स्तुति भी बंद हो जायेगी क्योंकि काम पूरा हो गया है और उसकी ज़रूरत नहीं रही **!** स्तुति करते रहने से परमात्मा, जो तुम्हारा ध्येय है, उसकी याद बराबर होती रहेगी और ख़्याल बराबर उस तरफ़ रहेगा जिसकी वजह से तुम रोज़ -व-रोज़ अच्छे बनते जाओगे **!** गुरु व मालिक इन्सान को नहीं कहते **!** वह सद्गुणों का समूह और इच्छित आदर्श है जो तुम्हारे दिमाग़ में है और जो तुमको बनना है **!**

अपनी निन्दा करने से अपनी कमज़ोरियों और बुराइयों की तुमको याद आयेगी और क्योंकि तुम उनसे घृणा करते हो, आहिस्ता-आहिस्ता वे तुम्हारा पीछा छोड़ देंगी और इन दोनों युक्तियों से तुम्हारी आत्मा के ऊपर से गिलाफ़ हट जायेंगे और आत्मा असली हालत में प्रकाशित होगी और तब परमात्मा का प्रेम जो उसकी असलियत और जान है, चमक उठेगा जिससे बाक़ी मैल भी बिलकुल इस तरह दूर हो जायेगा जैसे एक चिनगारी जंगल को साफ़ कर देती है **!** तुम कृतकृत्य जो जाओगे और ऐसी स्थिति प्राप्त कर लोगे जिसमें शान्ति ही शान्ति है और सब तरह के सुख ही सुख हैं **! (**संत वचन**-1)**

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

हमारा साधन

(1) हमारे यहाँ का अभ्यास का तरीक़ा हृदय से है जिसे 'ज़िक्र-ख़फ़ी कहते हैं ! इसमें प्रकाश या शब्द का ध्यान करते हैं ! परमात्मा की शक्ति की धार जो ऊपर से उतरी, पहले उसका असर दिमाग पर पड़ा ! उसका ठहराव वहाँ हुआ ! उसके बाद अलग-अलग मुक़ामों से उतरती हुई उसका असर दिल पर पड़ा ! उसी शक्ति की धार को सुरत कहते हैं ! शब्द में ॐ या राम या जो कोई और शब्द बताया जाय, उसका ख़्याल करते हैं !

(2) साधन 'शग़ल-राब्ता (गुरु स्वरुप का ध्यान) कहलाता है ! इसमें हृदय पर गरूमूर्ति का ध्यान करते हैं ! जो अभ्यासी आशिक-मिज़ाज के होते हैं अर्थात जिनमें प्रेम का भाव अधिक होता है उन्हीं को गुरुमूर्ति का ध्यान करने की इज़ाज़त देते हैं ! ज़बान से नहीं कहते ! हर एक अभ्यासी के लिए गुरुमूर्ति का ध्यान नहीं बताया जाता ! हृदय पर गुरुमूर्ति का धयान tareeaया अन्दर शब्द का अभ्यास या प्रकाश का ध्यान, यह अभ्यासी की हालत पर नर्भर करता है ! जैसा जिसको ठीक समझते हैं वैसा अभ्यास उसके लिए तजबीज़ कर देते हैं ! शब्द का अभ्यास देरपा (lasting) और बेहतरीन है ! यह सीधी सड़क है जिसमें भटकाव नहीं है ! प्रकाश और गुरुमूर्ति का ध्यान डिग सकता है ! पर यदि गुरु से प्रेम पैदा हो गया है और गुरु मुकम्मिल (पूर्ण) है तो अकेला वही प्रेम का खिचाव निकाल ले जाता है ! अभ्यास शरू -शुरू में दिन में दो या तीन वक्त, फिर पाँच वक्त और फिर आगे चलकर हर वक्त करने को बताया जाता है ! जो अभ्यास हर वक्त होता रहता है उसको 'दिल का जाप' कहते हैं !

यही संतों का तरीक़ा है ! मुझको गुरुदेव ने सुरत शब्द की तालीम दी ! नीचे का ज़िक्र-ख़फ़ी है !

तरीक़ा क्या है - गुरु अपनी इच्छाशक्ति से शिष्य के हृदय में शब्द, प्रकाश या गुरुमूर्ति के ध्यान का बीज दाल देते हैं ! इससे शुरुआत कराई जाती है ! शिष्य उसी का अभ्यास करता रहता है और उसकी तरक़्क़ी आगे के मुकामों तक होती जाती है ! (संत वचन -2)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

हमारे तरीक़े में भाइयों को जिन्हें अभ्यास में आनन्द तो आता है लेकिन जिनका आचरण ठीक नहीं हुआ है, घबड़ाना नहीं चाहिये ! यह रास्ता बहुत लम्बा व कठिन अवश्य है परन्तु सफलता उन सभी को मिलती है जो इस रास्ते पर बराबर चलते रहते हैं ! इसका अन्त भी बेमिसाल है, यानी इसकी प्राप्ति के पश्चात कुछ और प्राप्त करना बाक़ी नहीं रहता ! अभ्यासियों को तीन बातें अवश्य करनी चाहिये -- (1) जहाँ तक हो सके गुरु का सत्संग करें (2) आन्तरिक अभ्यास - ध्यान, भजन, सुमिरन और मनन करता रहें ! यहाँ तक कि एक सैकिण्ड के लिए भी अभ्यास को न छोड़ें (3) अपने मन के ख़्यालों पर हमेशा निगाह रखें और बुरे ख़्यालों को हटाकर अच्छे ख़्याल क़ायम करते रहें ! निश्चित है कि फ़ायदा होगा !

****

संसार की हर वस्तु छूटनी ही है ! सभी वस्तुयें नाशवान हैं, सभी से विछोह होना है ! जिस वस्तु में अधिक मन लगाओगे उसके छोड़ने में भी उतनी ही कठिनाई और कष्ट होगा ! यदि स्वेच्छा से नहीं छोड़ोगे तो मृत्यु के समय सभी स्वतः छूट जायेंगी और तब उस समय बहुत दुःख होगा ! मन को समझाओ ! मन त्रिकुटी का वासी है ! वह भी ऊँचे यानी स्वर्ग का सुख चाहता है और दुनियाँ के सुखों से ज़्यादा प्रसन्न नहीं है ! परन्तु वह दुनियाँ के सुखों में फँस गया है ! जब वह इन्द्रिय-भोग से उकता जाता है तो स्वयं प्रसन्नता अनुभव करता है ! दूसरे यह कि प्रारम्भ में वस्तुओं के छोड़ने में इसे दुःख होता है और इसके लिए परिश्रम करना पड़ता है ! बाद में यह आसानी से भलाई की ओर झुकने लगता है और प्रसन्न रहता है ! उसके प्रसन्न रहने से आत्मा भी शान्त रहती है ! यह अवस्था उस समय प्राप्त होती है जब मन सत की अवस्था में आ जाता है ! (संत वचन -2)

_____

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

आत्मा का आनन्द ऐसा आनन्द है कि जिसने एक-बार उसका अनुभव कर लिया वह उसको कभी भी नहीं भूल सकता ! यह ज़रूर है कि अपने-अपने संस्कारों के अनुसार अभ्यासी दुनियाँ की वासनाओं में फँस जाता है लेकिन यह आत्म-अनुभव और उसका आनन्द उसको ज़्यादा देर उसको वहाँ ठहरने नहीं देता और भोगों का ज़ोर कम हो जाने पर फिर उसकी याद सताती है और वह उस भोग को छोड़कर फिर अपने इष्ट की तरफ़ चलने लगता है ! इसी तरह धीरे-धीरे आत्मा सब चीज़ों से उपराम होकर अपने प्रीतम के चरणों में पहुँच जाती है और मन हमेशा के लिए शान्त हो जाता है ! यह ज़रूर है कि जब तक मन जगत की इच्छाओं से उपराम नहीं होता, आत्मा को परमात्मा की शरण नहीं मिलती और वह दुनियाँ के भोगों में फँसती रहती है ! यह रास्ता बहुत सुगम और सफल है लेकिन इसमें गुरु और शिष्य दोनों में दो बातों का होना बहुत ज़रूरी है - <u>गुरु में</u> (1) गुरु सच्चा हो यानी जिसने परमात्मा के चरणों में हमेशा के लिए जगह पा ली हो (2) वह बेग़रज़ हो यानी शिष्य की सिवाय आत्मिक उन्नति के कुछ न चाहता हो ! <u>शिष्य में</u> - (1) शिष्य को यह पक्का विश्वास हो कि जो कुछ गुरु कहता है उसी पर चलने में उसकी भलाई है, चाहे सख्ती हो या नरमी, दोनों अवस्थाओं में गुरु में दृढ विश्वास रखे (2) उसको गुरु से सच्ची प्रीत हो यानी उसके हृदय में सिवाय गुरु के प्रेम के कोई दूसरी चाह न हो और यदि हो भी तो वह सिर्फ़ अपनी आत्मा के उद्धार की ! गुरु में अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पण और लय कर चुका हो ! जितनी कमी इन दोनों बातों में होगी उतनी ही देर आत्मा के साक्षात्कार में लगेगी !

यह तरीक़ा है जो हमारे यहाँ बरता जाता है, जिसकी नीव कृपा करके हमारे बुज़ुर्गों ने डाली है ! इसमें आत्म-दर्शन पहले होता है और आचरण बाद में सुधरता है ! फिर परमात्मा की नज़दीकी (सामीप्य) हासिल करने के अतिरिक्त कोई कामना शेष नहीं रहती ! इसीलिए कहा है -

अव्वले माँ आख़िरे हर मुनतहीस्त,

आखरे माँ जेबे तमन्ना तिहीस्त !

(भावार्थ - हमारा प्रारम्भ वहाँ से होता है जहाँ औरों का अभ्यास समाप्त होता है, हमारा अन्त वहाँ है जहाँ तमन्ना की जेब ख़ाली हो जाती है - मन में कोई इच्छा शेष नहीं रहती ! (संत वचन -2)

श्रीकृष्ण-वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

मनुष्य की आत्मा पर चार मोटे परदे पड़े रहते हैं ! उनके शुद्ध किये बिना आत्मा का साक्षात्कार नहीं हो सकता ! (1) इन्द्रियों के भोग के ख़्याल का परदा (2) मन की वासनाओं की युक्ति का परदा (3) बुद्धि की चतुराई का परदा, और (4) अहँकार का परदा ! पहले तीन परदों के कारण चौथा परदा पड़ जाता है ! चौथा परदा बारीक होता है ! तप से तीन परदे तो शुद्ध हो जाते हैं लेकिन चौथा परदा बिना भक्ति के दूर नहीं होता और आत्मा का साक्षात्कार नहीं हो सकता !

जो लोग देश सेवा, परोपकार और अनेक शुभ कर्म दूसरों की भलाई के लिए करते हैं, लेकिन ईश्वर की भक्ति का सहारा नहीं लेते यानी ईश्वर की भक्ति नहीं करते, उनमें यह बारीक परदा छुपा रहता है जिससे आत्मा का साक्षात्कार नहीं होता और जिससे उनकी मुक्ति नहीं होती ! उनके कर्म तो कटते हैं और अगला जन्म इससे अच्छा मिलता है, लेकिन मोक्ष नहीं मिलती क्योंकि उनके और ईश्वर के बीच में ख़ुदी (अहं - ego) का परदा क़ायम रहता है ! उदाहरण के रूप में मानो कोई व्यक्ति देश-सेवा में दिन-रात लगा रहता है, लेकिन उसमें ईश्वर की भक्ति नहीं है, तो ज़ाहिरा तौर पर उसने ख़ुदी को दूर कर दिया है, परन्तु कारण रूप में उसका परदा मौज़ूद है ! उसको शुभ कर्मों का फल ज़रूर मिलेगा ! अगले जन्म में वह बहुत बड़ा आदमी होगा लेकिन उस परदे के कारण उसकी मुक्ति नहीं होगी ! बिना ईश्वर भक्ति के कारण-रूप में ख़ुदी का परदा क़ायम रहता है और जब तक कि कोई परदा ईश्वर और जीव के बीच में शेष रहता है उसकी मोक्ष नहीं हो सकती ! (संत-वचन -2)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

अगर तुम किसी की स्तुति करना चाहते हो तो अपने गुरुदेव की या मालिक (परमात्मा) की करो और निन्दा करना चाहते हो तो अपनी करो ! गुरु या मालिक की स्तुति करने से तुम्हारे ख़्यालात ऊँचे होंगे और जितने अच्छे गुण हैं वे ख़ुद-व-ख़ुद खैंच शक्ति के प्रभाव में आकर तुम्हारी तरफ़ आने लगेंगे और तुमको अपना केंद्र बनाते जायेंगे ! किसी दिन ख़्याल के असर की तासीर से तुम में वह गुण आ जायेंगे जो तुम हासिल करना चाहते हो और जो तुम्हारी ज़िन्दगी का लक्ष्य है !

गुरु इच्छित आदर्श का नाम है जो तुम्हारे दिमाग़ में है और जो तुम बनना चाहते हो ! गुरु के जिस्म के ख़्याल से तुम्हारा ख़्याली आदर्श यानी सूक्ष्म गुरु बार-बार तुम्हारे ख़्याल में आवेगा और उस बार-बार के ख़्याल से आत्मा की मदद लेकर तुम आहिस्ता-आहिस्ता वही बनते जाओगे ! यह एक ऐसी सच्ची बात है जिसमें शंका करने की गुँजायश नहीं है ! जब तुम अपनी निन्दा करोगे तो जितनी बुरी बातें हैं जिनकी वजह से तुम अपनी निन्दा करते हो, सामने आयेंगी अगर तुंम उनसे नफ़रत करते हो तो वे आहिस्ता-आहिस्ता दूर होती जायेंगी और एक वक़्त ऐसा आएगा जब तुमको ख़्याल भी न रहेगा कि फलां ऐब तुम में था और उसका संस्कार क़तई तौर से नष्ट हो जायेगा ! (संत वचन -1)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

अगर तुम चाहते हो कि तुमको असली आनन्द मिले तो किसी वक्त के पूरे संत-सद्गुरु से सम्बन्ध जोड़ो और उनसे 'असल' के जाने के भेद मालूम करो ! आहिस्ता-आहिस्ता तुम्हारा भ्रम दूर हो जायेगा, असली ज्ञान प्राप्त होगा और हमेशा-हमेशा के लिए दुःख से निवृति हो जायेगी ! यही मनुष्य जीवन का असली ध्येय है ! तुम सोचो कि तुम कौन हो, तुम्हारी गरज़ यहाँ आने की क्या है ? दुनियाँ में सब काम प्रकृति माँ किसी गरज़ से कर रही है ! क्या तुमको बेग़रज़ भेजा गया है ? नहीं, कभी नहीं ! इसमें बहुत बड़ी गरज़ छुपी हुई है ! सोचो और फिर सोचो ! अगर मालिक मेहरबान है तो तुमको ज़रूर असली ज्ञान प्राप्त होगा, और मालिक तो हमेशा ही मेहरबान है ! लेकिन दुर्भाग्य यह है कि हम उसकी ओर झुकते ही नहीं !

मुक्ति और निर्वाण, दोनों का मतलब आज़ादी का है ! जिस्म पर निगाह है, इसी को सब कुछ समझ रखा है ! अगर यह तन्दरुस्त है, तो ख़ुशी है, अगर यह बीमार है, तो तक़लीफ़ है और परेशान व दुखी हैं ! लेकिन जिस्म से निगाह ऊँची हुई कि असलियत समझ में आती है ! दिल पर निगाह है कि दिल की बीमारी और तन्दरुस्ती अब इतना परेशान नहीं करती ! अब ख़ुशी का दारोमदार (निर्भरता) इन्द्रियों की ख़्वाहिशात (इच्छायें) पूरी होती हैं तो ख़ुशी है, अगर नहीं होती तो भी कोई ख़ास दुःख नहीं है !(संत-वचन-1)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

औरों की निन्दा भूल कर भी न करो, यह संतों और महात्माओं का क़तई हुक्म है कि बुराई करने वाला परमार्थ का अधिकारी नहीं हो सकता ! हज़रत मुहम्मद साहब के पास एक चोग़ा था जो उनके इस्तेमाल में रहता था ! जब उनके निर्वाण का समय आया, आपने अपने ख़लीफ़ाओं को बुलाया और कहा कि -"हम यह चोग़ा आप में से एक साहब को देना चाहते हैं ! बतलाइये कि आप इसका क्या बदला देंगे ?" हर एक ने अपने ख़्यालात के मुताबिक अर्ज़ की ! एक साहब ने फ़रमाया कि मैं उम्र भर ख़िदमते-ख़ल्क़ (लोक सेवा) करता रहूँगा ! दूसरे साहब ने फ़रमाया कि मैं बेइंतहा इबादत (पूजा) करूँगा ! तीसरे ने कहा कि मैं रियाज़त (अभ्यास) करूँगा ! एक और साहब ने फ़रमाया कि मैं इसके बदले में उम्र भर मज़हबी ख़्यालात का प्रचार करता रहूँगा ! गरज़े कि हर साहब ने कुछ-न-कुछ जो ख्याले शरीफ़ में आया फ़रमाया !

आख़िर में हज़रत अबूबक्र साहब सिद्दीक़ी ख़लीफ़ा अव्वल ने फ़रमाया कि - "हज़ूर ! अगर यह चोग़ा मुझको बख़्शा जाये तो मैं तमाम उम्र इसी तरह ख़ल्के-ख़ुदा (ईश्वर की श्रष्टि) की ऐबपोशी (बुराई ढकना) करूँगा, जिस तरह यह चोग़ा जिस्म की परदापोशी (ढंकना/छिपाना) करता है !" हज़रत ने खुश होकर वह चोग़ा उनको इनायत फ़रमाया ! इससे ज़्यादा ऐबपोशी की बरकत के बारे में और क्या कहा जा सकता है ?(संत वचन -1)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णलाल जी महाराज)

भक्तों की शान ही निराली होती है ! वे तैयार बैठे रहते हैं और अपने प्रीतम परमात्मा के लिए किसी वक्त भी क़ुर्बान हो जाते हैं ! यही मरने से पहले मरना है ! जब सारी इच्छायें ख़त्म हो जाती हैं त्तभी इस हालत को पहुँचता है ! मीराबाई कहतीं थीं - " सूली ऊपर सेज पिया की, केहि विधि मिलना होय !" सारी इच्छाओं को मार देना ही सूली चढ़ना है ! जो सूली चढ़ जाता है वही पिया को पाता है ! यह त्रिकुटी का स्थान है जो दोनों भोंहों के बीच माथे में एक इन्च पीछे है ! यहीं पर आत्मा का ठहराव है ! इसी को 'शिवनेत्र" कहते हैं ! यही शिवजी का धनुष्य है जो रामचंद्र जी ने तोडा था और सीता जी को ब्याहा था ! सीता शक्ति का रूप है ! हज़रत मौहम्मद सफ़ेद घोड़े पर चढ़कर चाँद पर गए, वह यही 'त्रिकुटी' या 'शिवनेत्र' का स्थान है ! इसकी शक्ल अर्ध-चन्द्राकार होती है ! धनुष्य भी अर्धचन्द्राकार होता है ! इस मुक़ाम (चक्र) को पार किये बिना प्रीतम को कोई नहीं पा सकता ! ईसा की सलीब यही मुक़ाम है ! वे नमूना पेश करते हैं भक्ति का कि प्रीतम पर किस तरह फ़िदा हुआ जाता है ! जो जीते जी मर जाता है, वही असली ज़िन्दगी पाता है ! वगैर इच्छायें समाप्त किये स्वर्ग का राज्य -सन्तों का सतलोक (Kingdom of Heaven)) नहीं मिलता ! अपने सांसारिक जीवन को ऐसा बदलो कि वह ख़ुशी की ज़िन्दगी बन जाये और जब एक बार वह ख़ुशी मिल गयी तो हर हालत में ख़ुशी ही ख़ुशी होगी ! (सन्त वचन-1)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

मन क्या है ? पहले इसे थोड़ा समझो ! मन हमारे जन्म -जन्मान्तरों के संस्कारों का संग्रह है ! हमारे शास्त्रों में जो 84 लाख योनियों का वर्णन किया है, वह कोई कपोल-कल्पित धारणा नहीं है, बल्कि एक तथ्य है ! वर्तमान मन में सभी जीवों के स्वभाव की झाँकियाँ मौज़ूद हैं ! हमारे मन के अन्दर शेर का सा दम्भ, हाथी की सी मस्ती, कुत्ते एवं सांड की सी कामुकता, लोमड़ी एवं चीते की सी चालाकियाँ, कौवे जैसी धूर्तता, सर्प जैसा क्रोध, देवताओं और राक्षसों जैसी वृत्तियाँ और उनके व्यवहार स्वरुप पुराने संस्कार मौज़ूद हैं ! किसी एक के संस्कार प्रबल होने पर हम उस योनि को पहले भोग चुके होंगे परन्तु शेष संस्कारों को अब मानव योनि में भोगना है ! इस प्रकार हमारे मन पर अनेक संस्कारों का भार है ! अतः जब तक इन सभी की सफाई नहीं हो जायेगी तब तक मन में स्थिरता नहीं आ सकेगी !

****

अपने अन्तर में अपनी बुराइयों तथा त्रुटियों का अनुभव करना 'ज्ञान' है ! उन बुराइयों और त्रुटियों को दूर करना 'तप' कहलाता है ! हर परमार्थी को स्वध्याय करना चाहिए, अपने अन्तर में जो कमजोरी देखें, उसको दृढ़ता से त्यागने का प्रयत्न करना चाहिए, जैसे अधिक बोलना, अधिक खाना, दूसरों की बातों में हस्तक्षेप करना, आदि ! ये ऐसी बातें हैं की यदि मनुष्य चाहे तो कुछ समय के प्रयास से इनसे मुक्त हो सकता है ! इसके पश्चात जो और कठिन त्रुटियाँ हैं, जैसे काम, क्रोध, अहंकार आदि, इनको धीरे-धीरे छोड़ने का प्रयत्न करना चाहिए ! यदि प्रारम्भ से ही कठिन त्रुटियों से मुक्त होने का प्रयास किया जायेगा तो परमार्थी को निराशा होगी, क्योंकि काम, क्रोध, अहंकार आदि ऐसी बातें हैं, जिनसे मुक्त होने के लिए काफी समय तक दृढ प्रयास की आवश्यकता है ! इसलिए प्रारम्भ में उस त्रुटि से मुक्त होने के लिए प्रयास करना चाहिए जो सरलता से छूट जाये !

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

असली आनन्द आत्मा में है ! जिस बाहरी चीज़ पर उसका अक्स पड़ता है, मन और इन्द्रियाँ उसी में आनन्द लेने लगती हैं ! लेकिन आत्मा पर जन्म-जन्मान्तर से भले-बुरे संस्कारों के गिलाफ पड़े हुए हैं और वह दब गयी है ! वह दबी है, उसे उभारो ! इसके लिए आत्मा को ग़िज़ा की ज़रूरत है ! आत्मा पूर्ण ज्ञान, पूर्ण आनन्द और पूर्ण सत्य है ! धार्मिक पुस्तकों के पढ़ने से, संतो के सत्संग से और उनके उपदेशों पर चलने से आत्मा को ज्ञान प्राप्त होता है ! सच बोलने, अच्छे काम करने, अच्छे विचार रखने से आत्मा को ग़िज़ा (खाना,भोजन) मिलती है ! दान करना, दया करना, किसी का दिल न दुखाना, इन सब बातों से आत्मा को बल मिलता है ! आत्म ज्ञान की प्राप्ति ही ईश्वर की प्राप्ति है ! वही इन्सान की ज़िन्दगी का लक्ष्य है !

****

इस रास्ते में हिम्मत की बड़ी ज़रूरत है ! कभी घबरायें नहीं ! दुनियाँ से बराबर लड़ते रहें ! दुनियाँ से लड़ना यह है कि दुनियाँ की ख्वाहिशात और धोखे से अपने को अलहदा रखें ! परमार्थ और दुनियाँ का हमेशा बैर रहा है ! बिना दुनियाँ को फतह किये, परमार्थ नहीं मिल सकता ! इसलिए बराबर दुनियाँ से लड़ता रहे और ईश्वर की कृपा और अपनी कामयाबी का पूरा यकीन रखे ! कोशिश करने पर जब कामयाबी नहीं होती तो यह उसका इम्तहान है, और इम्तहान यह है कि देखा जाता है कि उसमें कितनी हिम्मत है ! जितनी दुनियाँ की तक़लीफ़ें होती हैं और रूकावटें आतीं हैं और दुनियाँ की चीज़ें छीनी जाती हैं, यह इम्तिहान है कि अपने लक्ष्य से कितना प्यार है और उनके लिए कितनी क़ुर्बानी कर सकता है !

श्रीकृष्ण-वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

ईश्वर के तीन रूप माने हैं ! ब्रह्मा - पैदा करने वाले, विष्णु-पालन-पोषण करने वाले, और शिव-संहार करने वाले ! ये तीनों देवता श्रष्टि को क़ायम रखते हैं और जब-जब ख़राबी होती हैतो विष्णु का अवतार आकर उस ख़राबी को दूर करके ठीक करते हैं ! लेकिन संत मत में ईश्वर का चौथा रूप भी मानते हैं जो संत या गुरु है और जो दुनियाँ से छुड़ाने के लिए आते हैं ! जब जीव इस आवागमन से तंग आ जाता है और इससे छुटकारा पाने ख़्वाहिशमंद (इछुक) होता है तो ईश्वर का चौथा रूप (संत रूप) इन्सानी शक्ल इख़्तियार करके (मनुष्य रूप धारण करके) और जो अधिकारी लोग जीवन-मुक्त होना चाहते हैं उनको अपनी सौहबत (सत-संगति) लाभान्वित करा कर अपने धाम यानी दयालदेश को वापिस ले जाते हैं जहाँ जाकर वापस नहीं आते ! इस तरह जीव हमेशा के लिए आवागमन से छूट जाता है ! बाक़ी जीवों पर जो उसको सोहबत में आते हैं उन पर भी उसका असर पड़ता है और वे भी आगे चलकर अधिकारी जीवों की श्रेणी में आ जाते हैं !

****

दुनियाँ के जंजाल, मन के विचार आदि, सब शैतान का पसारा है ! जब तक शैतान से नहीं लड़ोगे, कामयाब नहीं होंगे ! कामयाब होने पर सच्चा सुख, हमेशा क़ायम रहने वाला सुख, ऐसा सुख जिसके बाद किसी और सुख की इच्छा तुम्हें नहीं होगी, हासिल हो जायेगा ! यही लक्ष्य है ! लेकिन यह एक जन्म का काम नहीं है ! क़ुब्बते-इरादी (इच्छा शक्ति) मज़बूत करो ! अगर औरों ने हासिल किया है तो हम क्यों नहीं हासिल कर सकते ? दुनियाँ की चीज़ों को देखो, भोगो और छोड़ो, उनसे उपराम हो जाओ ! पहले वैराग फिर अनुराग ! जब परमात्मा से सच्चा अनुराग होगा और उसका सच्चा प्रेम हासिल हो जाता है, यही मोक्ष है !(संत वचन 2)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

मनुष्य स्वतंत्र है, वह स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है ! अपने कर्मों से वह चाहे तो पशु बन जाये, फ़रिश्ता (देवता) बन जाय और चाहे मुक़म्मिल -इन्सान (पूर्ण मानव) ! मुश्किलों का सामना करो और प्रकृति यानी माद्दे से ऊपर उठो ! उसे अपने नियंत्रण में लाओ ! अगर ज़रा सी मुसीबत से घबरा जाओगे तो तरक़्क़ी कैसे करोगे, कैसे स्वतंत्र बनोगे ? बच्चे को देखो, जब चलना सीखता है तो गिरता है, फिर माँ सहारा देती है, फिर गिर जाता है, चोट खाता है और फिर माँ उसे सहारा देती है ! इसी तरह अभ्यास करते-करते एक दिन वह आता है कि वह स्वयं चलने लगता है ! माँ की निर्भरता उसे नहीं रहती और वह इस मामले में आज़ाद हो जाता है ! तुम भी कर्म करो, अभ्यास करो और यदि तुम्हें सफलता नहीं मिलती है तो घबड़ाओ नहीं, चिन्तित मत होओ, उदास मत होओ ! परमात्मा जो तुम्हारी असली माँ है तुम्हें मदद देंगे और धीरे-धीरे अभ्यास करते-करते तुम एक दिन स्वतंत्र हो जाओगे ! माया से, आवागमन से, जन्म-मरण के दुःख से सदा के लिए छूट जाओगे !

परमात्मा ने तुम्हें बुद्धि दी है और कर्म करने की स्वतंत्रता दी है ! जो काम करो ख़ूब सोच समझकर करो ! काम करने में अपने आपको ख़ूब व्यस्त करो ! यदि असफल होते हो, तो रोओ और मदद माँगो ! जो मालिक तुम्हारी तरफ़ देख रहा है, वह आयेगा और किसी न किसी रूप में तुम्हारी सहायता करेगा ! लेकिन हर काम में नियत देखी जाती है, तुम्हारी भी देखी जाएगी ! परमात्मा बिना प्रेम के किसी की तरफ़ राग़िब (आकृष्ट) नहीं होता ! क्या दरअसल हम परमात्मा को अपना समझते हैं ? क्या हमारी लगन उसके साथ सच्ची है ? अगर हम दुनियाँ के सुखों में सुखी होते हैं, तो उस परमात्मा तक नहीं पहुँचेंगे ! उसकी दया यही है कि हम दुखी हैं ! इसके कारण हम उसे चाहते तो हैं, उसे याद तो कर लेते हैं ! धन, विद्या, बाल-बच्चे, स्त्री इत्यादि रास्ते की रुकाबट हैं ! (संत वचन -2)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

अगर ईश्वर से प्यार है और दुनियाँ से भी प्यार है तो तरक़्क़ी नहीं होती, वहीं का वहीं रहता है ! इसलिए ईश्वर के प्यार के साथ दुनियाँ से त्याग भी ज़रूरी है ! गुरुजन ईश्वर प्रेम और दया के सागर हैं ! वे हर समय प्यार करते हैं, लेकिन उसका अनुभव तभी होता है जब भक्त कोशिश करके अपने हृदय को दुनियाँ की ख़्वाहिशात और नफ़रत से शुद्ध कर लेता है, इससे पहले नहीं ! बुद्धि, इन्द्रियों और मन का हर समय शोधन करते रहना चाहिए !

****

जब मनुष्य विवेक बुद्धि से विचार करता है और यह सोचता है कि सच्चा सुख कहाँ है तब वह इस नतीज़े पर आता है कि दुनियाँ और इसके सामान में वह सुख नहीं है जो स्थायी रहने वाला हो और जिसकी उसको तलाश है ! यह निष्कर्ष निकलने पर वह पक्का इरादा कर लेता है और परमार्थी चाल चलने लगता है और जितनी मन्ज़िल वह तय करता जाता है उतना ही उसे दुनियाँ से वैराग्य और ईश्वर से अनुराग होता जाता है !

****

जो व्यक्ति बिना गरज़ के प्यार करता है, अपने बेटे-बेटी और दूसरों के बेटे-बेटी में बिना भेद भाव के सबको एक सा प्यार करता है, कोई फ़र्क़ नहीं समझता और जिसका प्यार जीव -जन्तुओं, वनस्पति इत्यादि सबके लिए समान है, उसी के दिल में परमेश्वर बसता है **!** यही प्यार ईश्वरीय कहलाता है **!**

श्रीकृष्ण-वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

अन्तर को शुद्ध करने के लिए पहले अपने इख़लाक़ (आचरण) की सफाई की ज़रूरत है ! इख़लाक़ क्या है ? तुम्हारे मन की वृत्तियाँ जो तुम्हें माया में फंसा देती हैं, उनसे अपने आपको अलहदा करना और उन्हे सत्य की तरफ़ मोड़ना, बुराई से भलाई पर आना और फिर भलाई तुम्हारा स्वभाव बन जाना ! दुनियाँ में जो चीज़ें दीख रही हैं, वह सब माया है, जो उसमें लुहाव है वही मन है ! मन बुद्धि को साथ लेकर इन्द्रियों के द्वारा हमें दुनियाँ में फँसाता है ! इन्द्रियों को विषयों से बचाओ, बुद्धि के कहने में मत चलो, गुरु के कहने में चलो ! मैंने अपने तज़ुर्बे से देखा है कि जहाँ मैंने गुरु का कहना नहीं माना, वहीं धोखा खाया ! मेरी ज़िन्दगी का तुम भी फ़ायदा उठाओ ! गुरु के कहने पर सख़्ती से चलो !

हम अपनी इन्द्रियों को रोकें, इसका मतलब यह नहीं है कि इन्द्रियों का इस्तेमाल ही न करें ! उनका धर्मशास्त्र के अनुसार इस्तेमाल करें, उन्हें सन्तुलित करें ! काम, क्रोध, वगैरा का इस्तेमाल यदा-कदा ही करें ! धर्मशास्त्र के अनुसार उनका इस्तेमाल करेंगे तो उनमें फँसेंगे नहीं ! सबसे बड़ा दुश्मन मन है जो हर क़दम पर धोखा देता है ! यही शैतान या माया का सबसे बड़ा हथियार है जो जीव को बहका कर ग़लत काम करवाता है और दुनियाँ में फँसाता है ! अगर गुरु के कहने पर चलोगे तो मन के चंगुल से छूट जाओगे ! इसलिए अपने गुरु के बताये हुए रास्ते पर क़ायम रहो, परमात्मा पर भरोसा रखो और धर्मशास्त्र के मुताबिक दुनियाँ के व्यवहार करो ! अपना आचरण सुधारो और राज़ी-व-रज़ा रहो, अपने लक्ष्य तक आसानी से पहुँच जाओगे ! (संत वचन -5)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

ईश्वर अपने भक्तों से किस चीज़ की आशा करता है *?*

ईश्वर प्रेम मुजस्सिम (साक्षात, मूर्तिमान) है ! जो आत्मायें उससे प्रेम करती हैं, वे उनके समीप हैं जो कोई आशायें और ख़्वाहिशात (इच्छायें) रखती हैं वे नीचे खिसक आती हैं ! जन्म धारण करती हैं, ताकि इच्छाओं को भोग कर समाप्त कर दें और असली प्रेम चमकने लगे जिसके पैदा होने पर आत्मा परमात्मा की समीपता हासिल कर लेती है ! इसलिए जो जीव ईश्वर से मिलकर एक होना चाहते हैं उनको उससे असली प्रेम होना चाहिए ! जो व्यक्ति अपने दोषों को दूर करना चाहते हैं वे शीशे में शक्ल देखकर ख़तो-खाल (मूँह के धब्बे) ठीक कर लेते हैं वरना शीशा बेग़रज़ है, कोई अपनी शक्ल उसमें देखे या न देखे ! परमात्मा इच्छा -रहित है, उसमें कोई इच्छा नहीं ! जो जीव हमेशा का सुख, पूर्ण ज्ञान और हमेशा की ज़िन्दगी चाहते हैं और जन्म-मरण के चक्कर से छूटना चाहते हैं, वे उसका ध्यान करके, यानी उसमें अपनी शक़्ल देखकर, इन्द्रियों, मन व बुद्धि के जंजाल से आज़ाद हो जाते हैं जो आत्मा है, और उसमें मिलकर एक हो जाते है ! जो अभी तक मन के चक्कर में फँसे हैं वो पैदा होते हैं और मरते हैं !

****

परमात्मा ने इन्सान को अक़्ल दी है ! अक़्ल से सोचकर, नतीज़े पर ध्यान रखकर, कोशिश में लग जाना चाहिए ! कोशिश करते समय नतीज़े पर ध्यान बिलकुल नहीं रखना चाहिए, बल्कि हर तरफ़ से तबियत को हटा कर काम में लग जाय ! जो नतीज़ा निकले, चाहे वह अपने ख़्याल के मुताबिक अच्छा हो या बुरा, ख़ुशी से क़बूल कर लेना चाहिये, क्योंकि परमात्मा आपसे ज़्यादा जानता है कि आपकी भलाई किस्में है !

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

ख्वाहिश पैदा करते हो तो संस्कार बनते हैं और उन्हें भुगतने के लिए आवागमन का चक्र चलता रहता है ! जब तक यह ज्ञान नहीं होगा कि यह दुनियाँ सुख की जगह नहीं है, यहाँ तो दुःख ही दुःख हैं, इससे छुटकारा पाने की ख़्वाहिश पैदा नहीं होगी, और जब तक इससे छुटकारा नहीं होगा, सच्चा सुख नहीं मिलेगा !

****

एक ही कर्म फँसाता है और वही कर्म निकालता भी है ! यदि उस कर्म के करने में अपने आपको शामिल कर लोगे तो वह कर्म आपको फँसायेगा और अगर उस कर्म को ईश्वर का समझ कर और ईश्वर की सेवा समझ कर करोगे तो वही कर्म बन्धन से छुड़ायेगा ! मालिक की याद बराबर बनी रहेगी और प्रेम व भक्ति पक्की होती जायेगी !

****

भिखारी (साधक-याचक) का काम माँगना है, देने वाला दे या न दे ! लेकिन अगर भिखारी दरवाज़े पर पड़ा रहेगा और दरवाज़ा छोड़कर नहीं जायेगा तो एक न एक दिन मेहरवानी होगी !

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

जब आदमी को दुनियाँ की चीज़ें मिलती हैं, उनसे वह खुश होता है और समझता है कि ईश्वर की बड़ी कृपा है ! वास्तव में वह ईश्वर से दूर होता जाता है ! उसके और ईश्वर के बीच माया आती जाती है ! अगर उसकी दुनियाँ की चीज़ों पर आघात होता है, जिससे ईश्वर का सामीप्य मिले, तो वह समझता है कि मेरे ऊपर ईश्वर की कृपा नहीं हो रही है, यद्यपि बात इसके बिलकुल विपरीत है !

****

संतमत में, आपके इस सत्संग में, परमात्मा (गुरु रूप) का प्रेम हासिल करके दुनियाँ की चीज़ें ख़ुशी और आसानी से छूट जाती हैं, यानी साधक उनसे उपराम हो जाता है ! उन्हें भोगता तो है पर उनसे लगाव नहीं रहता ! इससे उसे दुःख नहीं उठाना पड़ता ! आपको परमात्मा या गुरु से प्रेम हो गया है तो आप उसी प्रेम की शराब में मस्त और मदहोश रहते हैं ! ईश्वर प्रेम का नशा ऐसा है कि आप चाहते हैं कि यह चौबीसों घण्टे बना रहे ! यह है प्रेम से वैराग ! यही सबसे सरल और छोटा रास्ता है आत्मज्ञान का, ईश्वर-प्राप्ति का !

****

एक काम को बार-बार करते रहने से आदत पैदा होती है और इस आदत को छोड़ने में जन्म लग जाते

हैं ! इनके छोड़ने पर ही मोक्ष का अधिकारी होता है ! यह आदतें इतनी आसानी से नहीं छूटती जितना तुम समझ रहे हो ! जब आदमी तपाया जाता है और पिघलता है तब सुरत उस घाट से हटती है ! यह आग प्रेम की या कर्म की है !

———————

श्रीकृष्ण-वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

जो चीज़ तुम्हें फँसाये हुए हैं उन्हें ख़्याली तौर पर क़ुर्बान करो ! ख़्याली तौर पर उन्हें मालिक के चरणों में रख दो - "हे मालिक ! यह तेरी है, हमारा मोह का पर्दा दूर कर, हमें सच्ची रौशनी दिखा !" जब-जब हम फँसे हमने गुरुदेव से प्रार्थना की और उन्होंने हमेशा सहायता करने के साथ-साथ हमारी हिम्मत बढ़ाई ! उन्होंने हमेशा आगे बढ़ने की ताक़ीद (आदेश) दी ! फतेहगढ़ में जब मैं पढता था और जब-जब मेरा मन बुराई की तरफ़ खिंचता था, मैं लालाजी (गुरुदेव) से निवेदन कर दिया करता था ! अगर ज़ुबान से कहने में हिचकिचाहट होती थी तो लिखकर दे दिया करता था ! एक बार की बात है कि एक आदत मुझसे छूटती नहीं थी ! जब भी गुरुदेव के सामने जाता, बुरे ख़्यालात उभर आते और बड़ी परेशानी होती ! मैंने जाना बंद कर दिया ! उसके बाद उस रास्ते भी जाना बंद कर दिया जिस रास्ते पर लालाजी का मकान था ! छह महीने गुज़र गये ! मुझे बुलावा आया, डॉ. चतुर्भुज सहाय जी बुलाने आये ! मैं उनके साथ गया लेकिन दरवाज़े के अन्दर जाने की हिम्मत नहीं हुई, बाहर ही खड़ा रहा ! डाक्टर साहब अकेले अन्दर गए ! लालाजी ने उनसे पूँछा--"श्रीकृष्ण नहीं आया ?" उन्होंने कहा --"बाहर खड़े हैं !" उन्होंने हुक्म दिया - "इस तरह नहीं आयेगा, उसे आगे करके लाओ !" डाक्टर साहब मुझे आगे करके ले गए ! जैसे ही मैं कमरे में घुसा, लाला जी मुझे देखकर रोने लगे ! फ़रमाया - "हमने क्या क़सूर किया था जो तुमने आना बंद कर दिया !" उस दिन के बाद मेरी वह आदत हमेशा के लिए चली गयी ! मेरा तो यह तज़ुर्बा है कि जो आदत मैंने उनसे छिपाई वह रुक गयी और जो उनके आगे रख दी वह जाती रही ! यह समर्पण है ! (संत वचन-2)

श्रीकृष्ण-वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

जो चीज़ें तुम अपनी समझते हो, वो तुम्हारी नहीं हैं - यह धोखा है ! तुम उनके हो ! उनमें तुम्हारी आसक्ति है और वह तुम्हारी ख़ुदी की वजह से है ! ख़ुदी (अहं) ही सबसे ज़बरदस्त पर्दा है ! यह इस तरह समझो कि माला के दानों में सुमेर ! सब बुराइयों और रुकावटों का सिरताज़ ख़ुदी (अहं) है ! इस अहं के सुमेर में सब बुराइयाँ पिरोई हुई हैं ! इसे तोड़ दो, सब दाने बिखर जायेंगे, सब बुराइयाँ दूर हो जावेंगी ! यह हो कैसे ? इसका उपाय यह है कि 'असल' को पहिचानो ! सच तो यह है कि सब चीज़ें न तो तुम्हारे साथ आयीं थीं और न तुम्हारे साथ जायेंगी ! यह दुनियाँ ईश्वर की है और उसी ने तुम्हें यहाँ के सामान दिए हैं ! तो यही ख़्याल मज़बूत करो कि यह दुनियाँ मेरी नहीं है ! हर शख्स जो पैदा हुआ है ईश्वर के दर्शन पा सकता है ! मनुष्य-जन्म और गुरु - दोनों संस्कार-वश मिलते हैं, लेकिन इतने से काम नहीं चलता ! मनुष्य चोला मिला है और गुरु भी मिले हैं, लेकिन चाल नहीं चलती, तरक़्क़ी नहीं मालूम होती ! इसका क्या कारण है ? अधिकार नहीं बना ! जब तक अधिकार नहीं बनेगा, ईश्वर नहीं मिलेगा ! अधिकारी बनने के लिए पुरुषार्थ और तप करना पड़ता है ! मन को काबू में करो,चौबीसों घंटे उसकी चौकीदारी करो, उसे इधर-उधर मत जाने दो ! गुरु रास्ता चल चुका होता है ! वह जानता है कि मन कैसे और कहाँ घुमाकर पटकता है ! वह आगाह करता है कि देखो फलाँ काम मत करो ! अगर उसके कहने में चलोगे तो फ़ायदा उठाओगे वर्ना गुरु तो कह कर आगाह कर देता है, नुक़सान अपना तुम ख़ुद करते हो ! (संत वचन-5)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

तमोगुणी मन मनुष्य को इन्द्रिय-भोगों में फँसाता है और रजोगुणी मन वासनाओं में ! इन दोनों को साधकर सतोगुणी मन में मिला दो और ऊपर की ओर चलो ! जब तक मनुष्य दुनियाँदार रहता है तब तक रजोगुणी मन में व्यवहार करता है यानी रजोगुणी मन में ही तामसिक और सात्विक वृत्तियाँ मिलाये रखता है ! परमार्थी अभ्यासी तमोगुणी अवस्था को पहले रजोगुणी अवस्था में मिलाता है ओर फिर वहाँ से भी उसे ऊपर खेंच कर सतोगुणी मन में मिला देता है ! इसके बाद यह तीनों मन आत्मा में मिल जाते हैं और आत्मा ईश्वर में लय हो जाती है ! यही समाधि अवस्था है !

****

मन को काबू में लाना बहुत ही मुश्किल काम है बल्कि दुनियाँ में सबसे मुश्किल काम है ! वैराग्य और अभ्यास - दो ही इसके साधन हैं ! यह निश्चय हो जाना कि ये चीज़ें क्षणभंगुर हैं, यानी तब्दील होने वाली हैं, और उनसे हमेशा का सुख नहीं मिल सकता, उनसे अलहदगी अख़्त्यार कर लेना चाहिये ! यही वैराग्य है ! परमात्मा का नाम दिल की ज़बान यानी ख़्याल में लेते रहना अभ्यास है !

****

जब भी मन पर काल (माया) का प्रभाव हो, ख़्यालात ख़राब हों, हालत डिगमिग हों, तो गुरु के सामने ज़रूर जाता रहे ! अगर ऐसा न हो सके तो खत (पत्र) में अपनी हालत लिखकर भेज दें ! अपनी बुद्धि पर भरोसा न करें, वरना धोखा खा जायेगा !

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

तुम्हारा गुरु हर समय तुम्हारे साथ है, मगर मन की वासना और इन्द्रिय-भोग की ख्वाहिशों के नीचे दबा हुआ है ! अभ्यास यह है कि मन की ख़्वाहिशात और इन्द्रिय-भोग से बचो ताकि आत्मा अपने असली रूप में ज़ाहिर हो ! उससे मिलकर एक हो जाना ही असली मोक्ष है ! अगर इस जन्म में तुम्हारी मोक्ष नहीं हुई तो जब-जब जन्म लोगे तुम्हारा गुरु भी तुम्हारे साथ जन्म लेगा जब तक कि मोक्ष न हो ! यानी अगर तुममे आत्मा या परमात्मा की मौहब्बत है, तो जब तक जन्म लोगे, कोई न कोई आदमी ऐसा मिलेगा जिससे आत्मा या परमात्मा का प्रेम होगा और वही तुम्हारा गुरु होगा !

****

एक तरीक़ा ऐसा ज़रूर है जिसमें थोड़े ही दिनों में आरजी (अस्थायी) तौर पर आत्माका अनुभव हो सकता है और इख़लाक़ (सदाचार) की तकमील (पूर्णता) यानी मन की गढत और बुद्धि की शुद्धि बाद को होती रहती है ! यह तरीक़ा ख़ास-ख़ास हालतों में ही काम में लिया जाता है ! इसमें दो शर्तें ज़रूरी हैं ! पहली, यह कि गुरु मुक़म्मिल (पूर्ण) हो और दूसरी, यह कि शिष्य फ़िदाई हो, यानी उसे परमात्मा के दर्शन के सिवाय और कोई चाह न हो और अपने को गुरु के प्रति पूर्ण रूप से समर्पण कर चुका हो यानी गुरु के हुक्म के पालन के सिवाय उसे और कोई धुन न हो ! जब यह दोनों हालते मिलती हों तभी काम आसानी से बनता है !

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

दया और कृपा - जो सब पर बराबर होती रहती है, वह 'दया' कहलाती है, लेकिन जो ईश्वर से प्रेम करते हैं और उसके रास्ते पर चलते हैं, यह उसकी ' कृपा ' है ! ईश्वर-कृपा का आभास होना या न होना अधिकार या पात्रता पर निर्भर है ! इसलिए कोशिश हमेशा अपने को पात्र बनाने की करनी चाहिए और उसी के लिए प्रयत्न करना चाहिए ! गंगा बह रही है लेकिन मनुष्य उसमें से उतना ही जल ले सकता है जितना उसके पास पात्र है ! जिसके पास लोटा है, वह लोटा भर जल लेता है और जिसके पास घड़ा है वह घड़ा भर जल भर लेता है ! तात्पर्य यह है कि जिसके पास जितना बड़ा बर्तन है वह उतना ही ज़्यादा पानी भर लेता है !

****

असली दाता तो प्रेम के गुरु ही हैं लेकिंन शिष्य का जितना समर्पण (surrender) होता जाता है उतना ही अधिक प्रेम वह अपने अन्दर करने लगता है ! इस तरह जब गुरु से प्रेम पूरी तरह बढ़ जाता है तो जिस निर्गुण को कभी नहीं देखा है उससे प्रेम होने लगता है और गुरु एक ज़रिया (माध्यम) मालूम होने लगता है ! फिर गुरु पुश्तेपनाही (पीठ पीछे होकर मदद करने वाला) हो जाता है !

****

यह दुनियाँ धोखा दे रही है ! दिखाई कुछ दे रहा है, असलियत कुछ और है ! जो असल है वह सिर्फ़ ईश्वर है, उसे पाने की कोशिश करो !

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

दुनियाँ की ख़्वाहिशात (इच्छाओं) को ज्ञान से दबा कर या भोग कर उनसे उपराम हो जाना ही दुनियाँ का बनाना है ! मन की इच्छायें पूरी हो जाने पर, या मन के उपराम हो जाने पर, आत्मा की शक्तियाँ जाग उठती हैं और असली पिता या पति -परमात्मा के प्रति प्रेम पैदा हो जाता है ! यही प्रेम खैंच -खैंच कर अभ्यासी को परमात्मा के दरबार में ले जाता है और उनसे मिलाकर एक कर देता है ! फिर हमेशा-हमेशा के लिए अभ्यासी अपनी हस्ती (अहं) मिटा देता है ! यही दीन का बनना है ! जो प्राणी सच्चे गुरु का सहारा लेकर, उसकी याद को दिल में रखकर, और उसके भरोसे पर शुभ कर्म करता है, वह बह सकता है लेकिन कभी डूब नहीं सकता ! वह इन्द्रिय-भोग में फंस सकता है, लेकिन वह चेत कर फिर परमात्मा के कदमों में लिपट जाता है ! इसके विपरीत जो परमात्मा से विमुख हैं, वे पिछले अच्छे संस्कारों के कारण अच्छी अवस्था में दिखाई देते हैं, लेकिन जब बुरे संस्कारों का उभार होगा तो उनको कोई सहारा न होगा और वह इन्द्रिय-भोगों में बहकर उन्हीं में फँसा रहेगा और डूब जायेगा !

****

तीन बातें करते रहो - (1) अभ्यास (2) परमात्मा या गुरु से लौ लगाए रहो, और (3) समय कितना भी लगे, इसका ख़्याल मत करो ! धीरे-धीरे मन को समझा-बुझाकर आहिस्ता-आहिस्ता नियंत्रण में लाओ ! अगर नहीं मानता तो लड़ो मत, वरना समय व्यर्थ जायेगा ! संतों का तरीक़ा राज़ी-व-रज़ा का है ! हठ-योग का नहीं, राजयोग का है **!**

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

दुनियाँ को तो छोड़ना नहीं चाहते, एक कदम आगे बढ़ाना नहीं चाहते, और चाहते हो कि तरक़्क़ी हो ! कैसे हो ? जब तक ख़ुद कोशिश नहीं करोगे, तब तक गुरु कृपा और ईश्वर कृपा नहीं होगी ! हम चाहते हैं कि हमारे भाई भी कुछ समझ जायें ! तुम उस मामले में जो परमार्थ की तरफ़ ले जाता है, कुछ सुनना नहीं चाहते, कुछ करना तो अलग रहा ! भक्ति कैसे होगी ? फिर शिकायत करते हो की तरक़्क़ी नहीं होती !

****

परमात्मा तब तक मदद नहीं करता जब तक हम ख़ुद नहीं चाहते ! पहले अपनी कोशिश ज़रूरी है, इसी को निज कृपा कहते हैं ! लेकिन अपनी कोशिश करने से कामयाबी नहीं होती ! जब जब यत्न करते हैं, थक जाते हैं, कोई बस नहीं चलता, तब हमारे अहंकार पर चोट पड़ती है, वह चकनाचूर हो जाता है ! दीनता आने लगती है और हम कहने लगते हैं - " हे प्रभु ! हमारे बस का नहीं है, बिना तुम्हारी कृपा के कुछ नहीं होगा !" जब हम दीन बन जाते हैं, तो ख़ुदी का परदा हट जाता है और रास्ता साफ़ होने लगता है ! गुरु कृपा का आभास होने लगता है !

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

नए सत्संगी की परीक्षा नहीं ली जाती ! जब वह कुछ समय के लिए अपने रास्ते पर लगा रहता है या कुछ अधिकारी हो जाता है, तब परीक्षा ली जाती है ! बिना परीक्षा लिए प्रकृति माँ उसे आगे नहीं जाने देती ! इतिहास बतलाता है कि बिना परीक्षा दिए हुए कोई परमार्थी ईश्वर के दर्शन नहीं कर सकता ! नये अधिकारी की परीक्षा उतनी कठिन नहीं होती जितनी पुराने अधिकारी की !

****

परमार्थी में स्त्री और पुरुष दोनों के गुण होने चाहिए, तभी उसमें पूर्णता आयेगी - भक्ति भी और ज्ञान भी ! जहाँ दोनों का सन्तुलन होगा, वहीं पूर्णता होगी ! सन्तुलन का भाव है कि अपनी इन्द्रियों, वृत्तियों और दूसरी शक्तियों पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए ! ईश्वर में सदैव लय अवस्था में रहना चाहिए और यह अवस्था हमेशा एक रस होनी चाहिए ! जो मनुष्य इस अवस्था को प्राप्त करता है उसी का नाम पुरुष है !

****

अगर कोई शख्स आहिस्ता-आहिस्ता अपनी आदतों को ठीक कर ले यानी इन्द्रिय, मन, बुद्धि को काबू में लाकर सम-अवस्था में ले आये और अपनी ज़िन्दगी को सच्चाई के साँचे में ढाल दे और संतों की तलाश करता रहे तो ज़रूर उसको ईश्वर की तरफ़ से मदद मिलती है और कोई संत, ईश्वर का प्रेमी मिल जाता है ! (नवनीत)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

परमात्मा के पास सारी चीज़ें हैं - यह श्रष्टि उसकी लीला विलास है ! उसके पास सिर्फ़ 'दीनता ' नहीं है ! तुम दीन बनकर उसके पास जाओ ! वह तुम्हें अवश्य अपनी गोद में उठा लेगा ! दीन बनने के लिए अपने आपको मेटना पड़ेगा - यह तो जीवन का सौदा है ! इसके लिए यदि जीवन भर संघर्ष करना पड़े तो हिचको मत ! मौक़े को ग़नीमत जानकार मानव-जीवन को सफल करो, वरना यह समय फिर हाथ नहीं आयेगा !

सब सांसारिक वस्तुओं का जो ज़ाहिरा (दिखावे का) सहारा है, उसे छोड़कर उसी मालिक का सहारा लो ! सब चीज़ों को देने वाला वही है, लेकिन बाहरी रूप दूसरा है जो धोखा है ! जितना तुम दिल से उसके समीप होते जाओगे, उतना ही लम्बा चौड़ा रास्ता मिनटों में तय होता जायेगा !

दुःख और मुसीबतें परमात्मा की नियामतें हैं, इनके रहते हुए परमात्मा की ख़ूब याद आती है ! जब तक परमात्मा की याद बनी रहे उतनी देर का समय सार्थक है, बाक़ी निरर्थक है ! (नवनीत)

श्रीकृष्ण-वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

परमार्थ यानी अपनी आत्मा का अनुभव करने के लिए, या ईश्वर का साक्षात्कार करने के लिए, या हमेशा का सुख हासिल करने, दुःख से निवृति हासिल करने के लिए, दो चीज़ों की ज़रूरत है ! जितने काम हम करते हैं या तो अपने दिल (मन) की ख़्वाहिश के मुताबिक़ या बुद्धि के सुझाव से करते हैं ! इन दोनों का शुद्ध होना आवश्यक है ! जब तक ज़िन्दगी के ये दोनों पहिये सही तौर पर और साथ -साथ नहीं चलेंगे, ज़िन्दगी का सफ़र या तो मुशिकल से या बड़ी मुद्दत में तै होगा और यह भी मुमकिन है कि जन्मों चक्कर खाते रहें और कामयाबी हासिल न हो !

शुद्ध मन से मतलब यह है कि उसको ईश्वर से लगाव हो और तलाश करके उसको सतगुरु मिल गया हो और उससे उसको प्रीति हो गयी हो ! शुद्ध बुद्धि से यह मतलब है कि बुद्धि में दुनियाँ की नाशवानता देखकर सच्चाई यानी हमेशा रहने वाली चीज़ की तलाश हो और दुनियाँ से उपराम हो गया हो ! जब तक ये दोनों चीज़ें नहीं होंगी इस दुनियाँ के प्रपंच से छूटना नामुमकिन है ! अगर हमको सच्चा गुरु मिल जाय, और हमें उसमें सच्चा विश्वास हो जाय, और हम उसके आदेशों पर चलें, तो लक्ष्य पर पहुँच जावेंगे ! और अगर सच्चा गुरु तो मिल जाय मगर हमारा उसमें सच्चा विश्वास और प्रेम न हो, और हम कर्म और रहनी-सहनी उसके मुताबिक न बनावें, तो कामयाबी नामुमकिन सी हो जाती है, और अगर हम उस शुद्ध बुद्धि से दुनियाँ की नाशवानता पर ध्यान न देकर, जो चीज़ें नाशवान हैं और जिनमें सुख सिर्फ़ ज़ाहिरदारी है और दुःख भरा पड़ा है, छांट-छांट कर सच्चाई की तरफ़ नहीं चलते, तो भी क़ामयाबी नामुमकिन हो जाती है क्योंकि इस रास्ते में हर क़दम पर बड़े भयानक जानवर (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहँकार, आदि) हर समय मुँह खोले निगलने को तैयार हैं ! इसीलिए रास्ते को जानने वाले गुरु की ज़रूरत है जो हमारी हिफाज़त करता जाय वर्ना मुमकिन है कि किसी चक्कर में फंस कर हम अपना यह जन्म व्यर्थ कर दें ! (संत वचन – 5)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

परमार्थ-पथ पर चलने वाले को घबराना नहीं चाहिए ! यदि वह घबरा गया तो अपने पथ से हट जायेगा ! मन को शांत रखना चाहिए तथा माँ (प्रकृति) से सहयोग करना चाहिए ! माँ अति प्रबल है ! उसका मुक़ाबला करना कठिन है ! उसकी सहायता लेकर आगे बढ़ना चाहिए ! माँ खिलौने दे देती है ! यदि परमार्थी उस खिलौने से प्रसन्न हो गया तो वह कहीं का नहीं रहेगा ! बच्चा जब रोता है तो उसे माँ कुछ खिलौने दे देती है और बच्चा चुप हो जाता है और माँ अपने काम में लग जाती है ! वह पुनः रोने लगता है, पुनः माँ कुछ दे देती है, परन्तु यदि बच्चा रोता ही रहे और किसी खिलौने से नहीं माने तो माँ बच्चे को अपनी गोद में ले लेती है ! इसी प्रकार से परमार्थी को भी खिलौने से प्रसन्न नहीं होना चाहिए ! माँ (प्रकृति) धन दे देती है, स्त्री दे देती है, और कई प्रकार की वस्तुएँ लुभाने को दे देती है ! परमार्थी को उनसे प्रसन्न नहीं होना चाहिए, उसे तो प्रभु की गोद के लिए रोते ही रहना चाहिए ! और जब तक वह (माँ-प्रकृति) गोद में न ले ले, अपना कार्य करते ही रहना चाहिए !

****

जब तक मन सत-वृत्ति पर न आ जाये और आत्मा के स्थान पर न पहुँच जाये, तब तक पाबन्दी में रहना चाहिए ! दुनियाँ से डर कर रहना चाहिए और समाज व कर्मकाण्ड के नियमों का पालन करना चाहिए ! जब बुराई छोड़कर अच्छाई पर आ गए, सत पर आ गए और मन क़ाबू में आ गया, तब कोई चीज़ अगर रास्ते में आती है तो उसकी परवाह मत करो !

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

पहले ध्यान आता है, फिर बाद में सुमिरन ! सुमिरन दिल से होता है ! ॐ, राम आदि सभी नाम उसी के हैं पर तुम्हें गुरु जो नाम देता है, उसे चित्त देना चाहिए ! उससे लाभ होगा ! जिस नाम में शक्ति नहीं है, उससे लाभ नहीं हो सकता ! साधक के लिए गुरु द्वारा बताये या दिए गए नाम में ही शक्ति है ! क़ुरान शरीफ़ में एक आयत आई है जिसमें लिखा है कि अगर बन्दा (बन्दगी करने वाला,भक्त) मेरी तरफ़ एक कदम (पग) चलता है तो मैं उसकी तरफ़ सौ कदम चलता हूँ ! अपनी इच्छाओं को गुरु में लय कर दो ! दुनियाँ आग का गोला है ! दुनियाँ में आग लग रही है, हर तरफ़ मुसीबत-ही-मुसीबत है ! दुनियाँ में आराम कम, दुःख ज़्यादा है ! पहले इस दुःख को दूर करने का उपाय करो, फिर पूछना कि दुःख क्यों बना और दुनियाँ क्यों बनी ! इन बातों के पूछने से दुःख दूर नहीं होगा ! पहले दुःख को दूर कर लो उसके साथ-ही-साथ यह सब सवाल हल हो जायेंगे ! जो इन सवालों के चक्कर में फँसा तो न तो दुःख दूर होगा और न तुम्हारे सवाल हल होंगे ! यह भी मन का बड़ा धोखा है कि इन सवालों में फँसा कर वक्त को हाथ से निकाल देता है ! मौत का कोई वक्त नहीं है ! इसलिए आग लगने का कारण ज्ञात करने की अपेक्षा, पहले उसे बुझा लो, फिर आग लगने का कारण पूछना ! पहले परमात्मा हुआ या मैं, पहले प्रकाश हुआ या शब्द , उसके झगडे को छोड़कर, पहले आत्मा का दर्शन कर लो, फिर यह राज़ (रहस्य) अपने आप खुल जायेगा ! एक तो सच्चे गुरु का मिलना मुश्किल है, मिल जाय तो लग-लिपटकर अपना काम बना लो ! व्यर्थ तर्क और विवाद में पड़ कर अपना समय नष्ट मत करो ! (संत वचन-2)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

मन दुनियाँ में मुद्दत (बहुत समय) से फँसा हुआ है और दुनियाँवी ख़्वाहिशात (इच्छायें) हर समय उठाता रहता है ! दुनियाँ में सबसे मुश्किल काम इससे छुटकारा पाना है ! संतो ने इसका एक ही इलाज बताया है कि इसको परमात्मा या गुरु के चरणों में बाँध दो ! शुरू में यह बड़ी उछल कूद मचाता है लेकिन गुरु कमाई किये हुए हैं और शिष्य में श्रद्धा, विश्वास के साथ गुरु-प्रेम है, तो यह आहिस्ता-आहिस्ता रुकने लगता है ! रुकने में इसको आनन्द आने लगता है, और जितना ज़्यादा यह रुकता है उतना ही आनन्द भी बढ़ाता जाता है ! शुरू-शुरू में यह नहीं रुकेगा ! लेकिन कोशिश करो कि यह दुनियाँ से हटकर परमात्मा में लगे ! घबराओ नहीं, काम मुश्क़िल है, लेकिन फिर भी बड़ा सुखदायक है और हमेशा रहने वाला है ! जो मेहनत करते हैं और लगे रहते हैं, उन्हें क़ामयाबी होती है !

****

शुरू में आर्थिक स्थिति ख़राब होने से तबियत परेशान होती है, लेकिन आगे चलकर इसमें आनन्द आता है ! परमात्मा जिको प्यार करता है, उसको भूँखा भी रखता है ताकि वह उसकी याद से ग़ाफ़िल

(बेख़बर) न हो जाये ! अगर वह एक समय देना चाहता है तो हम दो समय क्यों मांगे ? उससे कुछ मत मांगो ! मांगो तो सिर्फ़ उसका प्यार मांगो ! अगर दोनों समय नहीं मिलता तो एक समय खाओ और वह जिस हालत में रखे, उसमें ख़ुश रहो और उसका शुक्र अदा करो ! विश्वास रखो कि यह हालत ज़्यादा दिन नहीं चलेगी !

****

जो कर्म किये हैं उनका फल अवश्य मिलता है ! लेकिन अगर परमात्मा के चरणों का आसरा लिए रहो तो कर्म आसानी से कट जाते हैं और आगे के संस्कार नहीं बनते !

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

मन बहुत दूर जाता है और ख्वाहिश किसी न किसी क़िस्म की बाक़ी रहती है ! दिल के बर्तन को मांजे जाओ और गुरु के फैज़ (कृपा) से धोते जाओ ! एक दिन वह वक्त आयेगा जब तुम्हारी तमाम बुराइयाँ धुलकर दिल का बर्तन चमक उठेगा और प्रीतम का दीदार (दर्शन) नसीब होगा ! यह ख़्याल न करना कि तुम में नुक्स नहीं है, यह शैतानी धोखा है !

****

पहले ख़्याल पैदा होता है और फिर ख़्याल में पुख्तगी ! यानी अगर सच्ची लगन है तो उसी के मुताबिक़ काम करने लगता है और फिर वह चीज़ मिल जाती है ! ऐसा नहीं हो सकता कि सच्ची लगन हो और चीज़ न मिले ! यह क़ानून के ख़िलाफ़ है, देर और सवेर ख़्वाहिश पर नर्भर है !

****

नफ़सानी ख़्वाहिश यानी कामेन्द्रिय पर बहुत देर में क़ाबू आता है ! इसका एक परहेज़ है और एक इलाज है ! परहेज़ यह है कि स्त्रियों की सौहबत से हमेशा परहेज़ रखें और अपनी स्त्री के सिवाय एकान्त में किसी स्त्री के साथ न बैठें ! इलाज यह भी है कि जो स्त्री सामने से गुज़रे उसके चरणों में अपना सर ख़याली तौर पर रखें और दिल में प्रार्थना करें कि -" हैं माता ! तू जगत जननी का अवतार हैं, मैं तेरा कमज़ोर बालक हूँ, मेरा इम्तहान न ले !" अगर यह इलाज और परहेज़ नहीं करेगा तो क़ामयाबी नहीं होगी !

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

मन से सोचो और बुद्धि से विचार करो कि यह लड़का जिसे तुम अपना कहते हो, किसका है ? क्या यह तुम्हारे साथ आया था या तुम्हारे साथ जायेगा ? यह मकान किसका है ? क्या इसे तुम अपने साथ ले जाओगे ? इसी तरह हर चीज़ के बारे में सोचो तो देखोगे कि कोई तुम्हारा नहीं है ! न तुम्हारे साथ आया था और न तुम्हारे साथ जायेगा ! यहाँ की कोई चीज़ तुम्हारे काम नहीं आयेगी ! ये सब फँसाने वाली हैं ! न मालूम तुम्हारी कितनी शादियाँ पिछले जन्मों में हुईं, कितने बेटे-बेटियाँ हुईं, कितने मकान बने, मगर अभी तृप्ति नहीं हुई ? यह सब तो होता रहा है और आगे भी होता रहेगा, लेकिन मनुष्य जन्म बार-बार नहीं मिलता ! इसी मनुष्य योनी में ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है, दूसरी में नहीं ! इसलिए इस जन्म को अमूल्य मानकर इसका उपयोग ईश्वर प्राप्ति के लिए करो !

****

गुरु अपना और परमात्मा का प्रेम हर समय देते ही रहते हैं ! परमात्मा का प्रेम उनके अन्तर के अन्तर में मौज़ूद ही है ! उसी से उनका रिश्ता परमात्मा से जुड़ा है ! अगर ऐसा नहीं होता तो फिर किसी का उनसे रिश्ता बन ही नहीं सकता और निज घर की तरफ़ लौटने के कोई मायने ही नहीं थे ! लेकिन गुरु या परमात्मा का प्रेम उसी समय इन्सान क़बूल करता है जब इन्द्रियों के भोग, इन्द्रियों की वासनाओं और बुद्धि की तरफ़ से ऊपर उठ जाता है ! इसलिए कोशिश करते रहो कि इन बातों से ऊँचे उठो ! अपने मन की भावनाओं को बराबर देखते रहो और ऊपर उठने का जतन बराबर करते रहो !

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

यह सोच कर मत बैठो कि परमात्मा बड़ा दयालु है, वह सब काम ख़ुद कर लेगा ! पुरुषार्थ करो, यही निज कृपा है ! पहले निज कृपा, फिर गुरु कृपा और तब ईश्वर कृपा होती है ! आराम से लेटे रहो, कुछ करो धरो नहीं, और सोचो कि सब हो जायेगा ! कैसे हो जायेगा ? कोई आदत बुरी पड़ गयी है और छूटती नहीं,तो उस आदत को दूर करने की कोशिश करो ! यदि किसी डर की वजह से कोई आदत छूटती है तो वह अस्थायी है ! जहाँ डर गया और फिर वह आदत आ गयी ! उससे नफ़रत पैदा हो जाय तब वह स्थायी रूप से जायेगी ! इसका एक सरल तरीक़ा सन्तों ने बताया है - गुरु से प्रेम बढ़ाओ, जितना प्रेम बढ़ता जायेगा उतनी दूसरी चीज़ों से नफ़रत होती जायेगी ! गुरु के प्रेम में तुम वह काम करना स्वयं बन्द कर दोगे जो उन्हें (गुरु को) पसन्द नहीं है ! इस तरह बुरी आदतें धीरे-धीरे ख़ुद छूटती चली जायँगी !

****

मन भले ही दब जाये, जल्दी मरता नहीं, कुतर-ब्यौंत किया करता है ! इसको तो सिर्फ़ वही मार सकता है जो अन्तर की चढ़ाई कर चुका होता है ! सन्तों ने इसका सरल और जल्द असर करने वाला, पूर्ण रास्ता निकाला है ! वह यह है कि किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढो जो अपने आपको ईश्वर में लय कर चुका है ! उसका प्यार ईश्वर का प्यार होता है ! ऐसे व्यक्ति का मन ख़त्म हो चुका होता है ! इस अवस्था में दुनियांवी इच्छायें फ़ुज़ला (विष्टा) नज़र आती हैं ! ईश्वर का प्यार मिल जाने पर आत्मा ख़ुद ही मन से न्यारी हो जाती है ! आत्मा पर से जो आनन्द आता है उसे भोगता तो मन ही है, लेकिन समझता है कि यह आनन्द विषयों में है !

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

संतों का सिद्धान्त है - "ईश्वर है, और अवश्य है, सृष्टि के नियम अटल हैं, वह सर्व- शक्तिमान, सम्पूर्ण ज्ञान और सत-चित-आनन्द है ! वह जो कुछ करता है, हमारी भलाई के लिए करता है, हमारी शुरुआत (आदि) और आख़ीर (अंत) उसी में है, वह सबके अन्तर के अन्तर में बैठा हुआ सबका सच्चा बाप है !" जीव जब तक संसारी वासनाओं में फँसा हुआ है, ऊपर नहीं उठ सकता ! जीवों के उद्धार के लिए सन्त-जन यहाँ पधारते हैं और प्रेम के माध्यम से जीवों को समझाते हैं ! जो उन पर विश्वास ले आते हैं तथा उनके बताये हुए मार्ग पर चलते हैं, वे अवश्य भवसागर पार कर जाते हैं !

****

सबसे आसान तरीक़ा उस परमात्मा तक पहुँचने का यह है कि बजाय इसके कि यह ख़्याल करने के कि वह दूर है, यक़ीन करो कि वह तुम्हारे नज़दीक से भी नज़दीक (निकटतम) है, उसका ध्यान करो ! हर समय उसकी याद रखो ! सोचो, वह तुम्हारा हमेशा का साथी है और उसी के पास जाकर तुम्हें सच्चा आनन्द मिलेगा ! दुनियाँ की यह सब चीज़ें उसी ने तुम्हें दी हैं और थोड़े दिन के लिए हैं ! उन थोड़े दिन रहने वाली चीज़ों के लिए अपने प्रीतम को मत भूलो ! जो चीज़ें उसने दी हैं, उन्हें अपनी मत समझो ! जब तक वे चीज़ें मौज़ूद हैं और उसने दी रखी हैं, उनकी सेवा में लगे रहो और जब वह वापिस माँगे, उसे ख़ुशी से वापिस कर दो ! इस तरह अपने मन को अन्तर में उससे लगाए चलो ! अपनी वृत्तियों को बाहर से हटाकर उसी में लगा दो ! हर समय उसका ध्यान करो ! (सन्त वचन-1)

श्रीकृष्ण-वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

सत्संग को असली परमार्थी शिक्षा देने का विद्यालय कहा जाता हे ! जो प्रेमी-भाई चेतकर सत्संग करते हैं और उसकी गरज़ को सामने रखते हैं, वे सत्संग को सलीक़े और ढंग से करते हैं और असली लाभ उठाते हैं ! जो ऐसा नहीं करते वे इस फायदे से वंचित रह जाते हैं !

चेतकर सत्संग करने से चार बातें सच्चे परमार्थी के अन्दर प्रगट होनी चाहिए :-

(1) सच्चा या पूरा यक़ीन परमात्मा की हस्ती का, उसके हर जगह मौज़ूद होने का,और गहरा शौक उसके दर्शन का पैदा होना चाहिए !

(2) संसार के भोग-विलास के सामान होते हुए भी और इस्तेमाल में आते हुए भी उसको सच्ची ख़ुशी न मिले बल्कि यही चाहता रहे कि दुनियाँ से जल्दी छूट कर वह अपने परमात्मा के सच्चे चरणों में पहुँचे !

(3) यह ख़्याल बराबर उठाता रहे कि हमसे ऐसे काम होते रहें जिससे हमसे परमात्मा खुश रहे और अपनी मुहब्बत का दान हमें दे और कोई काम हमसे ऐसा न हो जिससे उसकी दूरी और नाराज़गी हो!

(4) उसको ज़ाहिरी और अन्दरूनी (बाहरी और आन्तरिक) सत्संग मिले जिससे उसको पूरा निश्चय हो जाय कि कोई गुप्त शक्ति हर वक्त मेरी देख-भाल और सम्भाल कर रही है !

जिन व्यक्तियों को यह चार बातें हासिल हो जाती हैं वे ही सत्संग की क़ीमत समझ सकते हैं और वे ही परमात्मा के प्रेम के अधिकारी हो सकते हैं और मोक्ष पा सकते हैं ! (संत वचन - 5)

श्रीकृष्ण-वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

सत्संग में आकर पाँच बातें हर प्रेमी भाई को समझ लेनी चाहिए !

पहली - यह कि इस दुनियाँ की सब चीज़ें और अपना शरीर नश्वर हैं ! केवल आत्मा ही ऐसी चीज़ है जिसका नाश नहीं होता ! अगर हमारे शरीर में से वे सब चीज़ें हटा दी जायें जो नश्वर हैं तो अन्त जो बचेगा वह एक-रस क़ायम रहने वाला है, उसी को आत्मा कहते हैं ! वही हमारी जान व सुरत है !

दूसरी - यह कि इस आत्मा का भी एक असल भण्डार है जहाँ से यह आयी है और वह कुल जिसका यह अंश है, सच्चा मालिक (अंशी) है जिसे लोग परमेश्वर, सच्चिदानन्द, अल्लाह और अगणित नामों से पुकारते हैं !

तीसरी - यह कि आत्मा का गुण पानी की बूँद की तरह है ! जिस तरह हर क़तरा या पानी की बूँद क़ुदरती तौर पर अपने असल भण्डार समुन्द्र को वापस जाना चाहती है, वैसे ही आत्मा का प्रकृत प्रेम एवं लगाव अपने असल भण्डार सच्चे मालिक की तरफ़ है !

चौथी - यह कि जैसे आत्मा की चाह अपने असली भण्डार में समा जाने की होती है वैसे ही उस मालिक को यह ख़्याल होता है कि समस्त आत्मायें उसकी गोद में आ जायें !

पाँचवीं - यह कि उस सच्चे मालिक परमेश्वर की ओर से यह प्रबन्ध है कि समय-समय पर उसमें से रूहानी धारें प्रकट होकर पृथ्वी लोक पर उतरती हैं, सतगुरु का रूप धारण करके जीवों को निज भण्डार में समा जाने की राह बतलाती हैं और जो आत्मा इच्छुक होती हैं, उन्हें अपने प्रीतम से मिलने में पूरी-पूरी सहायता करती हैं ! कुछ को अपने साथ ले जाती हैं और बाक़ी के लिए बीज छोड़ जाती हैं ताकि वे भी उस राह पर चलकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करें ! इन्हीं को अवतार, सतगुरु, औलिया, इत्यादि नामों से पुकारते हैं ! अगर किसी को भाग्य से ऐसे सद्गुरु मिल जायें तो उसे चाहिए कि उनकी शरण लेकर अपना काम बना लें ! (संत वचन -5)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

सन्तमत प्रेम का मत है ! इसमें प्रेम और विश्वास, दोनों बहुत ज़रूरी हैं ! न तो अंध विश्वास की ज़रूरत है और न बुद्धि के तर्क की ! जो गुरु बतावें उस पर अमल करना प्रेम और विश्वास है, लेकिन समझ कर ! समझना बुद्धि का काम है और जो कोई बुद्धि से समझ कर चलता है वही 'मज़हब' है !

****

जिनकी वृत्ति बाहर की ओर है वे उसे अन्तर्मुखी बनायें ! सतगुरु से युक्ति जानकर आन्तरिक ध्यान करने का अभ्यास करें ! ईश्वर सभी जगह मौज़ूद है ! इधर-उधर भटक कर समय नष्ट न करें ! ईश्वर को अपने अन्तःकरण में देखें और इस काम में ऐसे महापुरुष का सहारा लें जिसने आत्मा का साक्षात्कार कर लिया है ! तभी फ़ायदा होगा ! बिना गुरु के फ़ायदा नहीं होगा ! गुरु की मदद से हम अपनी सुरत (attention) को अन्तःकरण पर केन्द्रित कर सकेंगे ! जलता हुआ दीपक ही बुझे हुए दीप को जला सकता है ! इसीलिए संतों ने बार-बार कहा है कि बिना आत्मदर्शी, गुरु, का सहारा लिए साधारण जिज्ञासु अपने अन्तःकरण के पर्दों को साफ़ नहीं कर सकता ! (नवनीत)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

जीवन मुक्त - असली मोक्ष की दशा

सबसे पहले स्थूल को स्थूल से, यानी शिष्य को गुरु के बाहरी शरीर से, प्रेम होता है और वह स्थूल सेवा करना पसन्द करता है, जैसे पाँव दबाना, नहलाना-धुलाना, कपडे साफ़ करना, इत्यादि ! इसके बाद उसका मन शुद्ध होने लगता है और वह सूक्ष्म हालत पर आने लगता है, यानी गुरु से हमख्याल होने लगता है ! (गुरु जो ख़्याल करते हैं, शिष्य उसे क़बूल करने लगता है) यह मन का प्रेम है ! यह प्रेम जब और बढ़ने लगता है तब गुरु और शिष्य एक जान दो कालिब हो जाते हैं, यानी शरीर तो दो दिखाई देते हैं लेकिन अन्दर से वे दोनों एक होते हैं ! यहाँ शिष्य की बुद्धि गुरु में लय हो जाती है ! इसके बाद शिष्य को 'कारण' यानी ईश्वर से प्रेम होने लगता है ! वह उसी को अपना सब कुछ मानता है लेकिन दुई (द्वैतपना) बाक़ी रहता है ! इसके बाद जब प्रेम और बढ़ता है तो वह आत्मा का प्रेम कहलाता है ! यही प्रेम की इन्तहा (पराकाष्ठा) है ! वह सब चीज़ों में, चाहे वे जानदार हों या बेजान,अपनी ही आत्मा देखता है ! सबको समान रूप से प्रेम करता है ! यही वह हालत है जहाँ ईसा मसीह ने कहा था - "Love Thy neighnour as Thyself " (अपने पड़ोसी को अपनी तरह प्रेम करो) Thyself का मतलब उस अमर आत्मा से है जो तुम्हारे अन्दर है और जो सबमें है ! किसी को दुःख -तक़लीफ़ हो तो ऐसा मनुष्य सबके लिए रोता है ! पहले इन्सान को दुःख में देखकर दुखी होता है, उसके बाद जानवरों, जीव-जन्तुओं और फिर वनस्पति को उसी तरह देखता है ! अगर किसी वृक्ष पर कुल्हाड़ा चल रहा है तो वह महसूस करता है कि जैसे उसी के शरीर पर चल रहा हो ! उसकी आत्मा विश्वआत्मा (Universal Soul) में लय हो जाती है ! सबमें एक ही आत्मा (अपना ही रूप) देखता है ! 'दुई' (द्वैतभाव) मिट जाती है ! जीवन मुक्त हो जाता है ! असली मोक्ष की दशा यही है ! जब तक यह हालत नसीब नहीं होती तब तक लक्ष्य (Ideal) प्राप्त नहीं होता ! यह बहुत मुश्क़िल है लेकिन गुरु-कृपा का सहारा लेने और रास्ता चलते रहने से आहिस्ता-आहिस्ता यह हालत नसीब हो जाती है !

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

सबसे बड़ी रियाज़त (अभ्यास) यह है कि परमात्मा के चरणों में ध्यान लगावें और जो दुनियाँवी तक़लीफ़ेंआवें उन्हें ख़ुशी से बर्दाश्त करें ! जो बात समझ में न आवे, उसे देह-धारी गुरु से दरयाफ़्त करें और जो वह बतावें उस पर चलने की कोशिश करें ! परमात्मा से प्रार्थना करें कि आपको सहनशक्ति दें और अपनी याद बनाये रखें ! जो शख़्स परमात्मा की याद में रहते हैं उन पर शैतान यानी माया का हमला नहीं होता !

****

शुभ कर्म करना और परमात्मा की याद में रहना यही असली परमार्थ है, और उसी के लिए अभ्यास किया जाता है ! अभ्यास ध्यान से शुरू करना चाहिए ! इसके बाद शब्द सुनने की कोशिश करनी चाहिए और सुनाई न दे तो फिर ध्यान करना चाहिए ! जिस अभ्यास में तबियत ज़्यादा लगती हो, वही अभ्यास ज़्यादा करो, चाहे ध्यान या शब्द सुनना, जो भी हो !

****

सच बोलना और हलाल की कमाई पर गुज़ारा करना बहुत बड़ी तपस्या है और अगर कोई इसी को अन्त तक निभा ले तो यह अकेला ही भवसागर से पार करा देगा !

****

जो ईश्वर पर भरोसा रखते हैं उनके सब काम वह ईश्वर ख़ुद पूरे करता है, लेकिन जल्दी नहीं, कई बार आज़माने के बाद ! जो सच्चे मन से उसकी शरण ले लेते हैं, वही क़ामयाब होते हैं !

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

हम इन तीन चीज़ों से दुनियाँ में फँसते हैं - (1) आँख से देखकर, (2) कान से सुनकर, और (3) जिव्हा से चखकर ! पहले बाहरी दृष्टि को बन्द करो तब अन्तर की आँख खुलेगी ! पहले कानों को बन्द करो, तब अन्तर के कान खुलेंगे ! अन्तर में कहीं मृदंग की आवाज़ है, कहीं झींगुर बोलने की, कहीं घंटे की ! यही अन्तर की धुन है ! बाहरी चीज़ों के ज़ायके (स्वाद) से तबियत हटाओ तब ईश्वर का नाम उच्चारण में तुन्हें आनन्द आयेगा ! इस तरीके से यह होता है कि जो काम मुद्दत यानी बहुत वर्षों से नहीं होता, वह शीघ्र होने लगता है और सच्चा ज्ञान होने लगता है ! पहला गुरु देहधारी गुरु है, उसका बतलाया हुआ अभ्यास करने से अन्दर का प्रकाश दिखाई देने लगेगा और अन्दर का शब्द सुनाई देने लगेगा ! यही आत्मा का नाम और रूप है और यही दूसरा गुरु है जो तुमको और अन्तर के अन्तर में ले जायेगा और आत्मा का साक्षात्कार करायेगा ! इस दूसरे गुरु के सहारे से सत्तलोक तक पहुँचो ! यहीं ज्ञान होता है, शांति मिलती है और सभी इच्छायें मिट जाती हैं ! यही जीव का आत्मा से मिलन है जिससे यह ज्ञान हो जाता है कि न आत्मा कभी मरती है और न पैदा होती है ! हमेशा थी और हमेशा रहेगी ! पूर्ण आनन्द मिल जाता है, जिसके बाद किसी और आनन्द की ख़्वाहिश नहीं रहती और सब इच्छायें मिट जाती हैं ! (संत वचन-2)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

जब-जब मन धोखा दे, दुआ करो, मदद मिलेगी ! दुआ में बड़ा असर है ! जहाँ ईश्वर रहता है, वहाँ पास ही मन भी रहता है ! जब तक ईश्वर की याद रहती है, मन दूर खड़ा रहता है ! जब ईश्वर को भूल जाते हैं, मन फ़ौरन आ कर दबा लेता है ! इससे बचने का उपाय है नाम का सतत उच्चारण ! हमेशा नाम ही मन के हमले से बचा ले जायेगा !

****

संसार और परमार्थ, लोक और परलोक, दोनों एक साथ नहीं मिल सकते ! एक को दूसरे पर क़ुर्बान करना पड़ेगा ! अगर परलोक चाहते हो तो दुनियाँ छोड़नी पड़ेगी !

****

हर मनुष्य जो पैदा हुआ है, ईश्वर के दर्शन पा सकता है ! मनुष्य जन्म और गुरु, दोनों संस्कार-वश मिलते हैं, लेकिन इतने से काम नहीं चलता ! मनुष्य चोला मिला और गुरु भी मिले, लेकिन चाल नहीं चलती, तरक़्क़ी नहीं मालूम होती ! इसका क्या कारण है ? अधिकार नहीं बना ! जब तक अधिकार नहीं बनेगा, ईश्वर नहीं मिलेगा ! अधिकार बनने के लिए पुरुषार्थ और तप करना पड़ता है ! मन को काबू में करो, इधर उधर मत जाने दो ! (नवनीत)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

जितनी भी दुनियाँ की खुशियाँ और आनन्द हैं वे सबके सब किसी दूसरी चीज़ पर आधारित हैं और मन की ख्वाहिशात को लिए हुए हैं ! अगर कोई मनचाही चीज़ हासिल हो जाती है तो बड़ी ख़ुशी होती है, औरअगर नहीं मिलती या कोई ऐसी चीज़ जिससे तुम्हें ख़ुशी मिलती हो, तुमसे दूर हो जाती है, तो दुःख होता है ! किसी चीज़ में भी हमेशा क़ायम रहने वाली ख़ुशी हासिल नहीं होती क्योंकि एक तो वे चीज़ें जिन पर वह ख़ुशी आधारित है, ख़ुद हमेशा रहने वाली नहीं है ! दूसरे, मन की हमेशा एक सी स्थिति नहीं रहती ! जिस चीज़ से एक क्षण उसे ख़ुशी मिलती है, उसी चीज़ से दूसरे क्षण उसे नफरत हो जाती है, दुःख होने लगता है ! मिठाई खाने में बड़ी अच्छी लगती है, पर जब बीमार हो जाते हैं तो वही मिठाई ज़हर मालुम होने लगती है ! लड़का पैदा हुआ, बड़ी ख़ुशी हुई ! पागल हो गया या मर गया, बड़ा दुःख हुआ !

****

जो मनुष्य नियमानुसार अपना जीवन व्यतीत करते हैं उनको सरकार का किसी तरह का भय नहीं होता ! इसी प्रकार यदि मनुष्य धर्मानुसार चले तो उसका मन शांत रहेगा ! परमार्थी को इससे और आगे चलना है ! यदि वह प्रकृति के नियमों के अनुसार चलेगा तो आत्मा के समीप आ जायेगा !

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

परमात्मा ने दुनियाँ को क्यों पैदा किया ? इसको संतों ने भिन्न-भिन्न तरीक़ों से समझाया है लेकिन वह सन्तोषजनक नहीं है, उसमें कोई न कोई आपत्ति निकालता है ! एक बार स्वामी रामकृष्ण परमहंस से भी यही सवाल किया गया था ! इसका जबाब उन्होंने इस प्रकार दिया कि परमात्मा की नज़दीकी हासिल करो, उससे मिलकर एक हो जाओ ! तभी इस मज़बून को अच्छी तरह से समझ सकोगे ! और बात भी ऐसी ही है ! परमात्मा के विषय में बातचीत सिर्फ़ आत्मा ही अनुभव करती है ! बुद्धि उसको नहीं समझ सकती ! दुनियाँदारों की आत्मा के ऊपर इन्द्रिय, मन और बुद्धि के परदे पड़े हुए हैं ! इसलिए वे परमात्मा के भेद को नहीं समझ सकते जब तक इन परदों को अपने ऊपर से न हटा दें ! पूर्ण रूप से तो उसी वक्त आपकी समझ में आयेगा जब आप इन्द्रिय, मन व बुद्धि की गुलामी से आज़ाद होंगे लेकिन फिर भी समझने की गरज़ से कुछ न कुछ कहा जाता है ! समुन्द्र अपनी हालत पर क़ायम है ! उसमें चाँद, सूरज, हवा के असर से लाखों-करोड़ों ही बुलबुले पैदा होते हैं और हज़ारों नज़्ज़ारे (दृश्य) दीखते हैं लेकिन इनके शान्त हो जाने पर न कहीं बुलबुले हैं, न कहीं नज़्ज़ारे हैं ! समुन्द्र ज्यों का त्यों है ! वह हमेशा से क़ायम है, क़ायम रहेगा ! उसमें न कहीं प्रलय है और न उत्पति ! जो बुलबुलों पर निगाह रखते हैं वे प्रलय और उत्पत्ति दोनों अनुभव करते हैं, और जो समुन्द्र पर निगाह रखते हैं उनको ये दोनों चीज़ें बहम दिखाई देती हैं ! सिर्फ़ एक शक्ति काम कर रही है, अपनी ख़्वाहिश (इच्छायें)और संस्कारों के वश जीव उसमें विभिन्न नज़्ज़ारे (दृश्य) देखता है ! जब तक संस्कार बाक़ी हैं, नज़्ज़ारे मौज़ूद हैं और जब ये ख़त्म हो जाते हैं,नज़्ज़ारे भी ग़ायब हो जाते हैं **!**

(नवनीत**)**

श्रीकृष्ण-वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)

मनुष्य जीवन का आदर्श - आदमी की ज़िन्दगी का आदर्श यह है कि वह अपनी असल सत, चित, आनन्द से मिलकर ख़ुद सत, चित, आनन्द हो जाय ! उसका साधन यही हो सकता है कि लौकिक और पारलौकिक जीवन को एकसा बनाये, यानी जिसका ध्यान अन्दर करता हैं, उसको बाहर देखे ! अन्दर-बाहर एक ही शक्ति, एक ही परम-तत्व का अनुभव करें ! एक में अनेक और अनेक में एक को देखे ! अपने में जगत को देखे और जगत में अपने को देखे ! हर जगह उसी एक परम-तत्व को अनुभव करे ! लेकिन बुद्धि ने प्रेम व ज्ञान को न सिर्फ़ खण्ड-खण्ड कर दिया है बल्कि उसके रूप को बिलकुल ही बदल दिया है ! हम दुनियाँ में अपने को और दूसरों को अलग-अलग अनुभव करते हैं ! यह ही नहीं, बल्कि अपने को दिखाते कुछ और हैं और होते कुछ और हैं ! दिल में कुछ और हैं, और ज़ाहिर कुछ और करते हैं ! यानी अपना जीवन दुनियावी -गर्ज़ (स्वार्थ) के लिए बिलकुल दुहरा बना लिया है और इसी को इख़लाक़ (सदाचार) कहते हैं ! यह बड़ी बद-इख़लाक़ी (अनाचार) है ! ऐसे आदमी असल से बहुत दूर जा पड़ते हैं ! ख़ुद धोखे में हैं और दूसरों को धोखे में रखते हैं ! इस दुनियाँ में दुःख पाते हैं और आगे भी दुखी रहते हैं ! यह जब तक अपनी असली हालत नहीं बदलेंगे और ज़ाहिरी और बातिनी (अन्दर से) एक न बनायेंगे, परमार्थ के अधिकारी नहीं बन सकते ! जब तक वह अपना दुहरापन छोड़कर एक न बन जायेंगे, दूसरों से कैसे मिल सकते हैं और खण्ड को अखण्ड में कैसे तब्दील कर सकते हैं और उस परम-तत्व से मिलकर एक कैसे हो सकते हैं ? इसलिए उनका पहला साधन यही होना चाहिए कि अपनी ज़ाहिरी और बातिन (बाहर और अन्दर) एक बनायें ! जो दिल में है वही जबान पर हो ! फिर दूसरों के दुःख में अपना दुःख और दूसरों के सुख में अपना सुख अनुभव करें ! अपना प्रेम दूसरों को दें ! अपने ज्ञान को दूसरों को दें ताकि सबका हित एक जगह हो जाय ! एक ही जाने पर ही एक से मिल सकते हैं वरना कदापि नहीं ! (संत वचन : 2)

श्रीकृष्ण - वाणी

(ब्रह्मलीन महात्मा डॉ. श्रीकृष्णा लाल जी महाराज)

संत की सेवा में जब भी जाओ, साफ़ दिल से जाओ ! जो अन्दर हो, वही बाहर हो - दोहरापन (hypocricy) न हो ! संत की सौहबत से इख़लाक़ (आचरण) सुधरता है, इन्द्रियों, मन और बुद्धि पर क़ाबू होता है ! अभी तक ये तुम्हारे पर क़ाबू किये हुए हैं, फिर तुम इनके ऊपर क़ाबू करोगे, इनके मालिक बनोगे ! और इस तरह जब तुम्हारी आत्मा मन के फन्दे से न्यारी हो जायगी, तब ईश्वर के दर्शन होंगे !

गुरु का ध्यान मन में और राम का नाम आत्मा से लेता रहे ! राम जो सबमें रमा है, उसका चाहे कोई भी नाम ले लो, बात एक ही पर पहुँचती है ! ॐ जो चारों जगत का मालिक है 'हरी' जो दुःख का हरने वाला है, 'शिव' जो दुनियाँ का मालिक है - लेकिन यह सब शुरू-शरू में नहीं हो पाता ! सब्र करो और बाधाओं से लड़ते चलो !

इन्सान जो कुछ सोचता है अगर वह ख़्याल बराबर क़ायम भी है तो भी बरसों उसको रूप धारण करने में लग जाते हैं और यह तो तब जब वह ख़्याल बराबर क़ायम रहे ! हम आप गृहस्थ हैं, हज़ारों किस्से लगे हैं जो कि एक ख़्याल क़ायम रहने नहीं देते ! इसलिए जो हम चाहते हैं जल्दी पूरा नहीं होता ! लेकिन इससे घबराना नहीं चाहिए ! वह शख्स बहुत ग़नीमत है जो दुनियाँ में अपना फ़र्ज़ पूरा करते हुए दो समय उसका नाम भी ले लेता है ! (नवनीत)

सागर के मोती

० हर समय यह ख़्याल रखो कि ईश्वर हर पल तुम्हारे साथ है और वह तुम्हारा सच्चा बाप है !

प्यार से उसका पवित्र नाम लेते रहो और उसकी मौज़ में रहो !

*****

० हर मनुष्य के व्यवहार से पता चल सकता है कि उसकी कितनी प्रगति हुई है ! यदि किसी को

क्रोध आता है तो यह स्पष्ट है कि उसके अन्तर में **'**अहंकार**'** छिपा हुआ है ! जितना अधिक**,** मनुष्य

क्रोधी होगा उतना ही उसके अन्तर में अधिक अहंकार छिपा होगा !

*****

० प्रेम में दूरी नहीं होती ! अगर सच्चा प्रेम है तो प्रियतम और प्रेमी हर वक़्त साथ रहना महसूस

करते हैं !

******

० सारी विद्याओं**,** कलाओं आदि का सिद्धांत यह है कि मनुष्य के मस्तिष्क में यह बात बैठ जाय

कि मैं क्या हूँ**,** मेरी असलियत क्या है**,** और मुझ में क्या गुण हैं ! लोग हर वस्तु की क़दर और

क़ीमत जानते हैं लेकिन अपने आपको नहीं पहचानते !

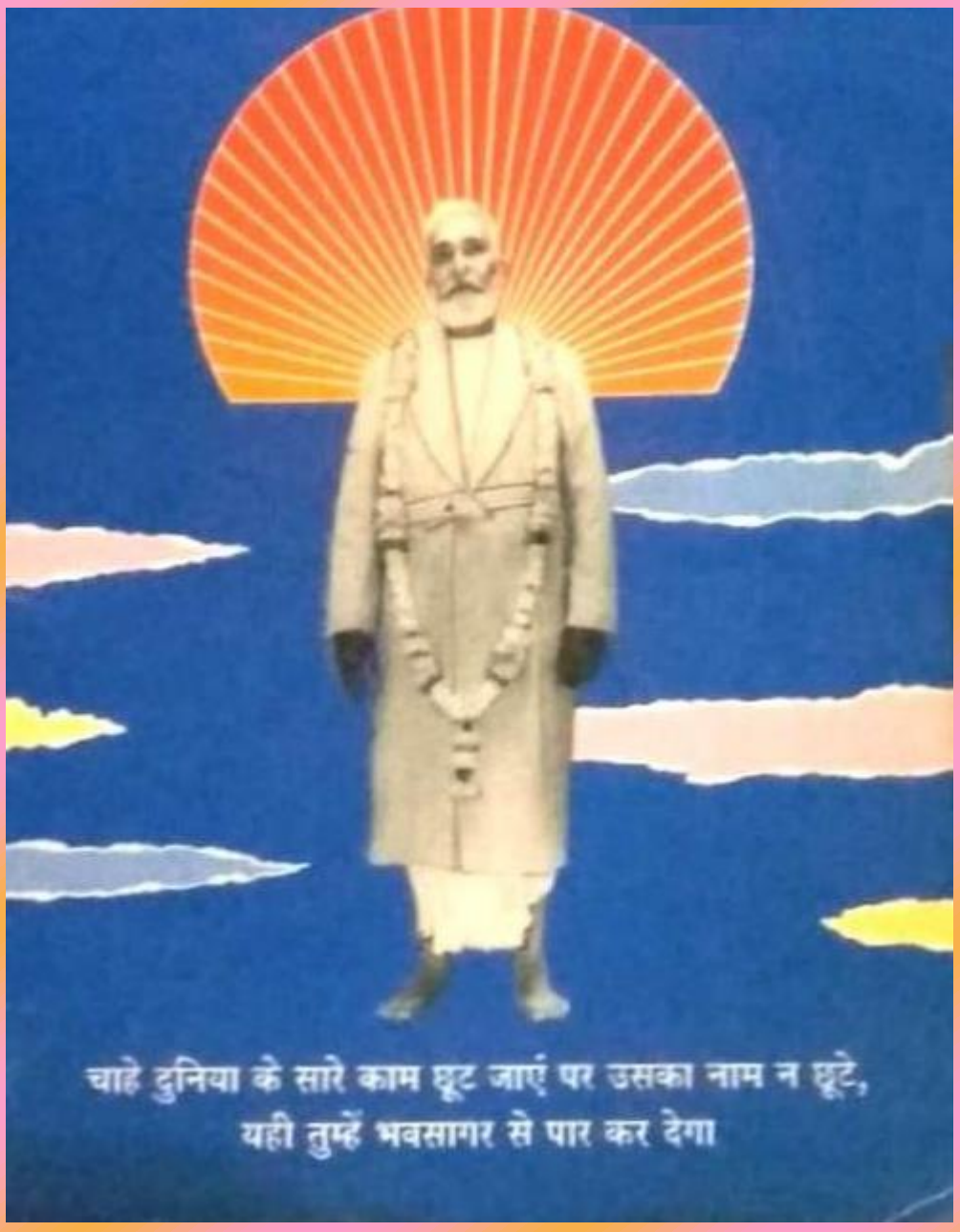
चाहे दुनिया के सारे काम छूट जाएं पर उसका नाम न छूटे,
यही तुम्हें भवसागर से पार कर देगा